• वर्ष ६७ • अंक १२ • मूल्य ₹ २०

जून (द्वितीय) २०२५

पाक्षिक

परोपकारी

महान् समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

हैदराबाद सत्याग्रह (1938-39) हेतु अजमेर में गठित समिति के सदस्यों का ऐतिहासिक चित्र, जिसमें उक्त सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी श्री चाँदकरण जी शारदा विराजमान हैं।

परोपकारिणी सभा के सदस्य युवा आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती (गुरुकुल आबूपर्वत) को आर्ष सेवाव्रती सम्मान से सम्मानित करते हुए स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६७ अंक : १२

दयानन्दाब्द: २०१

विक्रम संवत् आषाढ़ कृष्ण २०८२

कलि संवत् - ५१२६

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२६

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

०८८९०३१६९६१

मुद्रक- डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

८२०९५८६१६६

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जून द्वितीय, २०२५

अनुक्रम

०१. वैचारिक असहिष्णुता	सम्पादकीय	०४
०२. आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य	डॉ. महावीर मीमांसक	०५
०३. श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक	डॉ. ज्वलन्त कुमार	१२
०४. पुरुष अध्याय - यजुर्वेद ३१-५	डॉ. धर्मवीर	१६
०५. आर्यसमाज के दीवाने मास्टर...	श्री कन्हैयालाल आर्य	१९
०६. सज्जनों के सुकृत शान्तिप्रद हों	आ.रामनिवास गुणग्राहक	२४
०७. आर्यवीर दल का संस्कार एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न		२७
०८. निवेदन		२८
* साधना, स्वाध्याय, सहयोग के लिए निमन्त्रण		२९
* नवीन प्रकाशन पर ५० प्रतिशत की विशेष छूट		२९
०९. योग-ध्यान स्वाध्याय शिविर		३०
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३२
* प्रवेश सूचना		३२
१०.संस्था की ओर से....		३३
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

वैचारिक असहिष्णुता

मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो विवेक के आधार पर सत्य/असत्य तथा उचित/अनुचित का विचार कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करने में समर्थ है। किन्तु मानवता का इतिहास साक्षी है कि मनुष्य सामान्यत: सत्य का स्वीकार तथा असत्य का अस्वीकार या तिरस्कार नहीं करता है। यही कारण है कि अनेक पथ प्रदर्शकों के उपदेश के बाद भी मानवता सुख-चैन की श्वास नहीं ले रही है।

सत्य का स्वीकार न केवल धार्मिक, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। भौगोलिक दृष्टि से एक देश तथा दूसरे देश की सीमाएं निर्धारित हैं। यह निर्धारण राष्ट्र के विभाजन के कारण भी हैं। जैसे भारतवर्ष की स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत और पाकिस्तान की सीमाएं निर्धारित हो गईं। इस प्रकार सोवियत रूस का अनेक राष्ट्रों के रूप में विभाजन हुआ और उनकी सीमाएं भी निर्धारित हुईं। किन्तु इस निर्धारण के पश्चात् भी सीमा के इस तथा उस दोनों ही ओर के नागरिक/मानव सुख-चैन की श्वास नहीं ले पा रहे हैं। इसके विपरीत जो जर्मनी बर्लिन की दीवार के माध्यम से दो राष्ट्रों पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के रूप में बँटा था, आज उस दीवार को हटाकर एक साथ शान्तिपूर्वक रह रहा है। आखिर क्यों?

सुख-शान्तिपूर्वक रहने के लिए 'सहअस्तित्व' के भाव का संरक्षण और संवर्धन अपरिहार्य है। सहअस्तित्व के भाव को संवर्धित करने के लिए वैचारिक सहिष्णुता का होना आवश्यक है। वैचारिक सहिष्णुता व्यक्ति के नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों पर ही आश्रित रहती है। जो धर्म अथवा मत-पन्थ व्यक्ति में धृति, क्षमा, अस्तेय, अहिंसा आदि मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा पर बल देते हैं, वह व्यक्ति में सहिष्णुता/सहनशीलता को प्रतिष्ठापित करते हैं।

सहिष्णुता कुछ इस प्रकार की वस्तु नहीं, जिसे ऊपर से थोपा जा सके। धार्मिकता से प्रेरित/पोषित निरन्तर चलने वाला विचार प्रवाह व्यक्ति को धैर्य, क्षमा आदि गुणों से विभूषित कर सहिष्णु बना देता है। भारत-पाकिस्तान भले ही एक से दो बने हैं, किन्तु दोनों की विचारधारा पूर्णत: विपरीत है। भारतीय जनमानस आदिकाल से '**यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्**' तथा '**एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति**' के विचारों से आप्लावित रहा है, किन्तु इस्लाम की विचारधारा वैचारिक मतभेद के साथ ही '**सिर तन से जुदा**' से पोषित एवं पल्लवित है।

राजनैतिक वैचारिक विभिन्नताओं के सदृश ही धार्मिक वैचारिक विभेद हैं। भारतीय परम्परा में इन धार्मिक विभेदों को '**वादे वादे जायते तत्त्वबोध:**' कहकर संघर्ष से पराङ्मुख करते हुए सहिष्णुता के भाव को संवर्धित करने का ही प्रयास है। इसी का परिणाम है कि दार्शनिक दृष्टि से परस्पर विरोधी द्वैत-अद्वैत-विशिष्टाद्वैत आदि भेदों को स्वीकार कर परस्पर संवाद (विवाद नहीं) का मार्ग ही मान्य एवं समादृत रहा। धार्मिक जगत् में भी अनेक परस्पर विरोधी भावों के रहते हुये दूसरे के विचारों को सुनने तथा विचारने की परम्परा रही है, जिसे शास्त्रार्थ की संज्ञा से अभिहित किया गया।

उन्नीसवीं सदी के आते-आते यह विभेद बढ़ते दिखाई देने लगे थे, उस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैचारिक सहिष्णुता का पथ प्रशस्त किया। महर्षि का सम्पूर्ण पुरुषार्थ मनुष्य-मनुष्य के मध्य किसी भी प्रकार के भेद को समाप्त कर मानव मात्र के कल्याण का पथ प्रशस्त करना था।

वैचारिक असहिष्णुता को समाप्त करने के लिए महर्षि ने सौहार्दपूर्वक संवाद पर बल दिया। पौराणिक, ईसाई तथा मुसलमानों के साथ अनेक शास्त्रार्थ/संवाद करने के बावजूद इन सभी विद्वानों से सौहार्द बना रहा।

किन्तु विगत कुछ वर्षों में वैचारिक विभेद असहिष्णुता की पराकाष्ठा को प्राप्त करता दिखाई दे रहा है। शास्त्रीय विषयों पर तार्किक/प्रमाणाश्रित विचार की अपेक्षा जिस स्तरहीन भाषायी विवेचन '**यू ट्यूब**' पर दिखाई दे रहे हैं, वह किसी भी प्रकार मानवता के लिए श्रेयस्कर नहीं हैं। इस प्रकार के विचार भारतीय संस्कृति को निश्चय ही पतनोन्मुख करने वाले हैं। प्रबुद्ध आचार्यों/स्वयं को धार्मिक मानने वालों के लिए यह निश्चय ही चिन्ता के विषय होने चाहिएं। यदि हिन्दू समाज में भी यह प्रवृत्ति इसी प्रकार बढ़ती रही तो निश्चय ही यह इसके संकुचित हो जाने का मार्ग प्रशस्त कर देगी। '**एकं सद्बहुधा वदन्ति**' जैसे वाक्यों की अर्थवत्ता क्या इस वैचारिक असहिष्णुता के चलते टिक पाएगी?

– **डॉ. वेदपाल**

आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य-६

- डॉ. महावीर मीमांसक

गताङ्क से आगे...

पूर्व किये गये समूचे विश्लेषणात्मक मन्थन से अब अन्त में यह यक्ष प्रश्न निकला कि अब क्या करें? आर्यों का सार्वभौम साम्राज्य लाने के लिये ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यबन्धुओं को बहुत कुछ करना पड़ेगा। ''कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् अपघ्नतोऽरावण:'' वैदिक मन्त्र को अपना मिशन बनाना पड़ेगा। महात्मा गांधी जी की तुष्टिकरण की नीति से टक्कर लेकर शुद्धिकरण की नीति को मिशन बनाकर अपने जीवन का बलिदान, शहादत देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान को आदर्श बनाना होगा। ऊंची-ऊंची अट्टालिकाओं, शानदार भवनों, आरामतलबी की सभी सुविधाओं, एयरकण्डीशन की ठण्डी हवा में बैठकर आराम परस्ती से जीवन बिताने की सुविधापूर्ण आदतों को तिलाञ्जलि देकर मैदान में आना होगा, शहरी जीवन के स्थान पर देश के गाँव-गाँव में जाना होगा, गांवों में खेतों में काम करने वाले पूरे के पूरे परिवारों के साथ लगना होगा, हल और ट्रैक्टर पर बैठ कर जमीन के पेट को फाड़कर देश के लोगों के पेट भरने के लिये अन्न को उपजाने वाले किसान के साथ लगना होगा, किसान के साथ हाथ में फावडा लेकर खेती की भूमि को समतल करने बीज खरपतवार को खोदकर फसल को साफ करने में तल्लीन श्रमिक के साथ लगकर वेद के ''कृषिमित् कृषस्व'' और ''अक्षैर्मा दीव्य'' मन्त्रों का क्रियात्मक अर्थ और भाष्य समझाने का बीड़ा उठाना होगा। तभी आर्यसमाज का सदस्य, प्रधान और मन्त्री बनने का अधिकारी बनेगा। तभी वैदिक धर्म की जय, ऋषि दयानन्द की जय और आर्यसमाज अमर रहे के नारों से वातावरण स्वत: गुञ्जयमान हो जायेगा। तभी आर्यसमाजों और आर्यसभाओं में पदलिप्सा और प्रतिष्ठा प्राप्त करने की वासना समाप्त होगी, कोर्ट और कचहरी के चक्कर लगाने में समय नष्टकर न कर के दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिये आर्यसमाज आगे बढ़ेगा।

इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वर्तमान में आर्यसमाज और आर्य प्रतिनिधि आदि सभाओं में जो कुछ हो रहा है वह बेकार है। नहीं, वह सब कुछ बहुत सराहनीय है। वह तो होते ही रहना चाहिये। किन्तु इससे भी बहुत कुछ अधिक करने की महती आवश्यकता है। क्या और कैसे करने की आवश्यकता है, वह हम आगे लिखेंगे, किन्तु अब जो पीड़ा हो रही है वह यह देखकर हो रही है कि जो बहादुरशाहजफर मुग़ल वंश का अन्तिम बादशाह भारत का था, सन् १८५७ के विप्लव के विफल हो जाने के बाद अंग्रेजों ने जिसे रंगून की जेल में भेजकर फांसी दे दी थी, आज कोई प्रिंस याकूब संयुक्त राष्ट्र संघ में जाकर अपील याचिका डालता है कि भारत में स्थित वक्फ की समस्त सम्पत्ति का मैं एक मात्र मालिक हूँ, अत: वक्फ की पूरे भारत की सम्पत्ति मुझे दे दी जाये। इतना ही नहीं अपितु वह खुल्लम खुल्ला धमकी भी देता है कि यदि ऐसा नहीं हुआ तो तैमूर की तरह पूरे भारत (हिन्दुओं) का कत्लेआम (जनसंहार) कर दूंगा। ऐसे लोग रोजा और अफ्तार जैसी अपनी धार्मिक पार्टियों में भी ऐसी ही हिंसा की बात करते हैं। यह सब अत्यन्त गम्भीर चिन्ता का विषय है। इतना ही नहीं, देश के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय गम्भीर चिन्ता का विषय है। इतना ही नहीं, देश के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय तक को चैलेञ्ज देकर पूरे देश के वातावरण को दूषित करते हैं। प्रश्न है कि ऐसे लोगों का क्या इलाज? कैसे इनको सुधारा जाये? कैसे इनको समझाया जाये?

जो लोग शरीयत को संविधान से ऊपर रखने और मारने काटने की बात करते हैं ऐसे जाहिल और शैतान लोगों का इलाज उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री आदित्यनाथ जी योगी के पास एकदम सुलभ है। लिखने की आवश्यकता नहीं है।

अब हम कुछ कठोर प्रश्न इनसे करते हैं।

सदन में वक्फ संशोधन बिल पास हो जाने पर असद्दुदीन बिल की प्रति यह कहते हुये फाड़ देते हैं कि महात्मा गांधी के अफ्रीका के लोगों पर अत्याचार करने का कानून बनाने पर महात्मा गांधी ने कानून की प्रति यह कहते हुये फाड़ दी थी कि मेरी आत्मा इसे स्वीकार नहीं करती, अत: महात्मा गांधी के अनुकरण पर मेरी भी चेतना वक्फ बिल को स्वीकार न करने के कारण इसे फाड़ता हूँ। अरे असद्दुदीन! क्या आप अपनी तुलना महात्मा गांधी से करते हैं? महात्मा गांधी जी तो एक सत्याग्रह में अपने सत्याग्रहियों द्वारा हिंसा करने पर सत्याग्रह बन्द करके अनशन व्रत करके बैठ गये थे, क्या आप के अनुयायी और साथी सत्य और अहिंसा का किंचित् मात्र भी पालन करते हैं और आप भी क्या ऐसा अनुशासन रखते हैं? आप तो महात्मा गांधी की पैर की धूल के बराबर भी नहीं हैं।

बिल को विफल करने के लिये ये मौलवी (मदनी जैसे) और मुसलमान सब प्रकार की चालबाजियां अपनाते हुये दबाव, धमकी, गुण्डागर्दी और दंगे करके भड़काने का भरपूर प्रयत्न करते हैं, क्या आप समझते हैं कि ऐसी करतूतें करके आप सफल हो जाओगे?

वक्फ की सम्पत्ति पर कुछ एक गिने चुने अमीर मौलवी मुसलमानों का कब्जा है और वक्फ की जमीन से आय के पैसे के लिये उन्होंने लूट मचा रखी है वक्फ की जमीन पर उन्होंने बड़े-बड़े मॉल और कॉमर्शियल दुकानें बनाकर अपना घर भर रहे हैं, एक भी गरीब मुसलमान को एक रूपया भी उसी आमदनी का नहीं मिलता। राजनीतिक नेता भी वोट बैंक बनाने के लिये तुष्टिकरण की नीति पर चल रहे हैं।

यह हिन्दुओं की अत्यन्त उदारता और भाईचारे की भावना थी कि विभाजन के समय तुम को यहां से खदेड़ कर पाकिस्तान नहीं भेजा और अपने ही यहां रख लिया, जिस का दुष्परिणाम अब हिन्दुओं को भुगतना पड़ रहा है। महर्षि पाणिनि ने ३५०० वर्ष पहले ही अपनी प्रसिद्ध ग्रन्थशास्त्र में तुम्हें आयुधजीवी (छुराबाज) बतला दिया था जिसे आज का हिन्दु नहीं समझ पाया।

पाकिस्तान अपने आतंकवादी गुटों को अपने यहां पालता पोसता और पनाह (शरण) देता है और समय-समय पर उनके द्वारा भारत में भयङ्कर दुर्घटनायें करवाता है, किन्तु तुम्हें और तुम्हारा साथ देने वाली राजनीतिक पार्टियों को कोई संवेदना और सहानुभूति कभी भी नहीं होता। तुम खाते यहाँ का हो और गीत वहाँ के गाते हो असद्दुदीन जी इस के अपवाद हैं, अत: वे प्रशंसा के पात्र हैं। किन्तु वक्फ में वे कट्टर जिद्दी हैं। तुम्हारे (मुसलमानों) से मूल प्रश्न है कि क्या तुम भारत के मूल निवासियों के वंशज हो या तैमूरलंग, बाबर आदि विदेशी आक्रान्ताओं के वंशज? यदि तुम्हारे पूर्वज मूलत: भारतीय थे और किसी कारणवश यवन आक्रान्ताओं का धर्मान्तरण करके मुसलमान हो गये तो अब अच्छा अवसर है अपना सनातन धर्म अपना कर घरवापसी कर लो और यदि तुम विदेशी आक्रांता के मूल वंशज हो तो अपने मूल देश को लौट जाओ। समाधान बड़ा सीधा और सरल है।

इसी वोट बैंक की दुर्नीति के कारण हमारी एक बहन ममता बनर्जी दीदी भटक रही है, पता नहीं उनको सद्बुद्धि कब आयेगी? मुर्शिदाबाद का जनसंहार की घटना ने तो बंगाल को बंगला देश बनाने में कोई कमी नहीं रखी। यह बड़ी शोचनीय स्थिति है।

पाकिस्तान तो बुरी तरह हताश और पागल हो गया है। बलोचिस्तान, तालिबान, पठान और पी.ओ.के. (पाक ओकोयोपाइड कश्मीर) इसक हाथ से निकल चुके हैं, धारा ३७० हटने के बाद कश्मीर को फलता फूलता,

विकसित होता, कश्मीरी नवयुवकों को सेना और पुलिस में भर्ती होता देखकर पाकिस्तान जलभुनकर खाक हो रहा है। पाकिस्तान का सेनापति मुनीर ने भड़काने और आग लगाने वाले जो बयान दिये हैं, यह भारत ही है जो वह सब सुनकर सहन कर गया। पाकिस्तान का जो बेडा गरक हुआ है उसके जिम्मेदार पाकिस्तान के ऐसे ही ये सर्वोच्च नेता हैं। यह तथ्य जगजाहिर है, कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। अब तो इनका भगवान् ही मालिक (खुदाहाफिज) है। पाकिस्तानी ही इनको पानी पी पी कर कोस रहे हैं, और भारत की प्रशंसा करते नहीं थकते हैं। कश्मीर भारत अभिन्न अंग है, पहलगांव की व लेसरन की घाटी में देशभर से आये हुये निरपराध मासूम निर्दोष, सैलानियों पर गोलियां बरसा कर उनकी जान लेकर बाद में अपनी जान बचाने के लिये डर के मारे चूहों की तरह बिलों (गुफाओं) में छुपने के लिये भागते फिरने वाले शैतान पिशाच आतंकियों का रेवड (पशुओं का झुण्ड) भी भारत से कश्मीर को छीन नहीं सकता। अब तो पी.ओ.के. की भारत में मिलने की सद्भावना भी शीघ्र पूरी होगी। अकेला पाकिस्तान अपने आप धूलि चाट कर रह जायेगा। उसकी ऐसी छिन्न भिन्न हालत बनेगी कि एक टुकड़ा इधर गिरेगा और दूसरा टुकड़ा उधर।

२२ अप्रैल के दिन पहलगांव में आतंकियों द्वारा किये गये कलमा और सुन्नत देखकर हिन्दू और मुसलमान होने का निश्चय धर्म (सम्प्रदाय) देख-देख करके हिन्दु निर्दोष सैलानियों का जनसंहार का जघन्य अत्याचार अपराध करने की कीमत न केवल आतंकियों को ही अपितु उनके आका ऐसा करने का आदेश देने वाले पाकिस्तान के प्रमुख सेनापति असीम मुनीर और उसकी सारी कुख्यात शैतान मण्डली, देने से किसी भी हालत में बच नहीं सकती। समूचा पाकिस्तान खण्ड-खण्ड होने वाला है। उनको वो सजा मिलेगी जिसकी कल्पना भी वो नहीं कर सकते। इसमें सबसे बड़ी प्रसन्नता और सौभाग्य की बात यह है कि सारा देश राजनैतिक पक्ष और विपक्ष पूरी तरह एकमत और एकजुट है। कश्मीर के पहलगांव की बैसरन घाटी के बलिदानियों की अमर शहादत से समूचा देश बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के आहत है। भारतीयों को यह तथ्य स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि यह हमला हिन्दु-मुसलमानों का कतई नहीं था यह आक्रमण पाकिस्तान का हिन्दुस्तान (भारत) पर था। इसे हिन्दु-मुसलमानों का रूप देने की चाल पाकिस्तान के सेनापति असीम मुनीर की थी, ताकि भारत में यह साम्प्रदायिक रूप लेकर आपस में ही हिन्दु-मुसलमान मारकाट करते हुये स्वयं नष्ट हो जायें, पाकिस्तान को कुछ न करना पड़े। प्रत्येक भारतवासी को यह चाल बिना किसी शक-व-शुबह के स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये ताकि देश सिविल (गृहयुद्ध) वार में उलझ कर भटक न जाये और दुश्मन (शत्रु) की टेढ़ी चाल सफल न हो जाये। यह युद्ध निर्विवाद रूप से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का है। भारत के सभी मुसलमान एकजुट होकर भारत के पक्ष में खड़े हैं और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगा रहे हैं। वे कश्मीर के स्थानीय आतकंवादी हैं जो इस पहलगांव में नरसंहार के प्रमुख भागीदार हैं जिनके घरों को बुलडोजर द्वारा भूमिसात करके धुलि में मिलाया जा रहा है। उन नरपिशाचों को तो पकड़कर तिलतिल करके तड़पा-तड़पाकर मारा जाना चाहिये। फांसी की सजा के ही वे हकदार हैं। मुस्लिम समाज की यह बहुत बड़ी समझदारी है कि ऐसी घड़ी में वह देश के साथ खड़ा है।

ये ऑपरेशन सिन्दूर इसी पहलगांव की बैसरन घाटी में की गई आतंकियों द्वारा २२ अप्रैल २५ निरपराध मासूम भारतीयों की निर्मम हत्या थी। वे १० मई को भारतीय सेना ने पाकिस्तान में आतंकियों के अड्डों को उनमें छुपे हुये १०० आतंकियों को, ११ एयरबेसों को धूलि में मिला दिया। भारतीय सेना के बहादुर सेनापति सोफिया और व्योमिका ने कुछ २३ मिनट में अपनी

अचूक मिसाइलों द्वारा शत्रु का जो हाल किया सारी दुनिया ने देखा। भारत- ना 'पाक' युद्ध तो नि-सन्देह अवश्यम्भावी था। भारत के आदरणीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जी के प्रति देश की जनता अपना अटूट विश्वास, स्नेह और सम्मान अपने हृदय में संजोये हुये उनके नेतृत्व में चल रही है। विपक्ष भी कभी-कभी अपना विपक्षीय धर्म का प्रदर्शन करते हुये भी उनका समर्थन ही कर रहा है। किन्तु इसमें उनका राजनीतिक स्वार्थ कितना छुपा हुआ है, कितना राष्ट्रहित में है, इस पर बड़ी पैनी नजर रखने की आवश्यकता है। असदुदीन ओवैसी मोदी जी का समर्थन तो बड़े जोरदार शब्दों में करते हैं, किन्तु उनका यह समर्थन आतंकवाद के विरोध तक सीमित है, क्यों, इस सहमति के पीछे उनका वक्फ बोर्ड कानून का विरोध करके अपने पक्ष में बोर्ड में संशोधन न होने देने की प्रबल इच्छा छिपी हुई है? यह कहाँ की नेकनीयती और उनके बेरिस्टर होने की सदुपयोगिता है कि वक्फ बोर्ड के संशोधन के लिये लाखों लोगों के सुझाव लेने के बाद, संयुक्त संसदीय समिति में संशोधन के पक्ष में मतदान करवा कर संशोधन का समर्थन पारित करवाने के बाद, लोकसभा और राज्यसभा में मतदान करवाकर संशोधन के पक्ष में बहुमत आ जाने के बाद तथा राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षर करके संशोधन का कानून बन जाने के बाद भी सर्वोच्च न्यायालय में संशोधन का कानून बन जाने के बाद भी सर्वोच्च न्यायालय में संशोधन के विरोध में याचिकाओं की भरमार करके न्यायालय को उस कानून पर पुनर्विचार करके कानून को पलटने के लिये दबाव बनाने की हिमाकत करना कहीं की नैतिकता और राष्ट्रवादिता तथा न्यायप्रियता रह गई है? सर्वोच्च न्यायालय द्वारा क्या निर्णय किया जाता है, देखते हैं? आशा है कि सर्वोच्च न्यायालय इन की धमकी, दबावों और गुण्डागर्दी आदि ककी चालबाजियों के समक्ष किञ्चित् मात्र भी दबाव में नहीं आ गया।

विभाजन के समय यह समुदाय भारत में रहने के पक्ष में निर्णय लेने के लिये भारत पर अहसान जताता है। यह तो भारत की उदारता थी कि इन्हें अपने देश में रख लिया, अन्यथा इन सबको गिन-गिन करके पाकिस्तान भेज देना चाहिये था। विश्व भर के मंजे हुये अष्टाध्यायी के प्रोक्ता पाणिनि मुनि ने (लगभग ३५०० वर्ष पहले) इस वर्ग को आयुजीवी कहा है जो छुराबाजी करके अपनी आजीविका चलाता था। यह फितरत तो इन के खून में (डी.एन.ए.) में मौजूद है। यह सबमें इसलिये लिख रहा हूँ, क्योंकि मैंने भारत के मूल ऋषि मुनियों के द्वारा लिखित ग्रन्थों को पढ़ने और अनुसन्धान करने में अपने जीवन का अमूल्य समय लगाया है और अब देश हित में उसका सदुपयोग कर रहा हूँ। वक्फ की जमीन तो यहीं की है, ये यवन तो लगभग हजार वर्ष पहले भारत पर आक्रमण करके यहां बसने लगे थे, फिर यह जमीन इनकी कहाँ से हो गई? इनके पूर्वज यदि यहां के मूल निवासी थे और किन्हीं कारणों से धर्मपरिवर्तन कर लिया तो मूलत: तो यह जमीन यहीं के मूल निवासियों की हुई। जमीन ऐसी तो होती नहीं जिससे कोई अपने जेब में डालकर उधर से इधर ले आये? वक्फ की अवधारणा यहाँ के मूलनिवासियों की तो है नहीं, यह सरासर इनकी जबरदस्ती है जो किसी भी हालत में मान्य नहीं होनी चाहिये।

अब सिन्धु नदी के पानी पर नया विवाद इन आक्रान्ताओं ने छेड़ दिया। यह सिन्धु शब्द ही मूलरूप से आर्यों का है जो आर्य बाद में, वर्तमान में भी हिन्दु कहलाते हैं। आगे हम इसी विषय में विस्तार से लिखेंगे। किन्तु असदुउद्दीन ओवैसी ने सिर पर तिरंगे रंग की पगड़ी बांध कर पाकिस्तान मुर्दाबाद के जो गगनभेदी नारे लगाये हैं, उन्हें समूचे विश्व ने देखा। देशभक्ति का वह आदर्श अनुपम है और सारे मुस्लिम समाज के लिये अनुकरणीय है। ओवैसी जी के इस सिंहनाद को सुनकर पाकिस्तान के मुसलमानों में भी यह भाव उमड़ रहा होगा कि काश, हम भी अपने इन भिखमंगे भ्रष्टाचारी नेताओं

के विरोध में मुर्दाबाद के नारे लगा पाते।

हिन्दुओं पर बांगला देश में मोहम्मद युनुस द्वारा करवाये जा रहे पाशविक अत्याचार पश्चिमी बांगल में मुर्शिदाबाद में होने वाले अत्याचारों को भी मात दे रहे हैं। इन दोनों स्थानों को भी सही रास्ते पर लाने के लिये भारत सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिये। यह हमने अति संक्षेप में लिखा है, प्रत्येक विषय पर विस्तार से अलग से लिखेंगे।

अब सुनिये हिन्दु बनाम आर्य। इसी अन्तिम अति रोचक संवाद से हम अपनी बात समाप्त करेंगे–

हिन्दु बनाम आर्य

हिन्दु शब्द बहुत प्राचीन नहीं है, आठवीं शताब्दी से पहले के इतिहास में इस शब्द का प्रयोग नहीं मिलता है। वस्तुत: यह हिन्दु शब्द सिन्धु शब्द का अपभ्रंश रूप है। पश्चिम के आक्रान्ता यवन आदि ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उन्हें सिन्धु नदी पार करके आना पड़ा, सिन्धु नदी पार किये बिना वे भारत में प्रवेश नहीं कर सकते थे। उनके आक्रमण का शिकार होने वाले लोग सिन्धु नदी के पार रहते थे। अब उनके सामने प्रश्न यह था कि सिन्धु नदी के पार हरने वाले लोगों को वे क्या कह कर पुकारें? आज भी यह परम्परा है कि नदी के एक पार रहने वाले लोग उस नदी के पार रहने वाले लोगों को मारुका कहकर पुकारते हैं जिसका अभिप्राय है कि अमुक नदी के पार रहने वाले भी। गंगा नदी के पार रहने वाले लोगों को दूसरी तरफ रहने वाले लोगों को गंगा पार कहकर पुकारते हैं इसी प्रकार यमुना पार शब्द भी यमुना नदी से पार रहने वाले लोगों के लिये प्रचलित है। इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग महा वैय्याकरण पाणिनि ने लगभग ३५०० वर्ष पहले अपनी प्रसिद्ध रचना अष्टाध्यायी में किया है, पाणिनि की अष्टाध्यायी का सूत्र है "पारेमध्ये षष्ठया वा" अध्याय २ पाद। सूत्र १८। इस सूत्र के उदाहरण हैं, "पार" "गङ्गया, पारेकङ्कर, या गङ्गपारक।" सूत्र की पूरी व्याख्या के लिये देखिये, काशिकावृत्ति: या और कोई भी पाणिनि के सूत्रों पर व्याख्या ग्रन्थ। इसी प्रकार से सिन्धु से पार रहने वाले लोगों को सिन्धुपारम् या प्राकृत जनसाधारण की भाषा में संक्षिप्त रूप में सिन्धु कहा जाना स्वाभाविक था। किन्तु पश्चिम के विदेशी यवन आदि स अक्षर के स्थान पर ह अक्षर का उच्चारण करते हैं जैसे सप्ताह का उच्चारण हप्ताह प्रसिद्ध है। इस प्रकार पश्चिम के आक्रान्ताओं का सम्बोधन सिन्धु के स्थान पर हिन्दु था जो एक भौगोलिक शब्द है। सिन्धु पार रहने वाले सभी लोगों को वे हिन्दु कर पुकारने लगे अत: सिन्धु नदी से पूर्व दिशा में रहने वालों का वास्तविक नाम आर्य ही था जो यहाँ के मूल निवासी थे। बाद में पाश्चात्य लोगों का इस प्रदेश पर आधिपत्य हो जाने के बाद बहुत से परिवर्तन हुये, धर्म या सम्प्रदाय परिवर्तन उनमें मुख्य था। व्यास, रावी, चिनाब, झेलम और सिन्धु इन पांच नदियों वाले प्रदेश को पञ्कन्द कहा जाता था जो बाद में प्राकृत भाषा में पंजाब कहलाया। हमारा यह विवरण साधारण स्तर का है, गम्भीर ऐतिहासिक विश्लेषण पर कुछ सम्भवत: मामूली अन्तर के साथ बहुत गम्भीर तथ्य निकल सकते हैं, किन्तु सारांश यही रहेगा।

जैसा हम पहले कह चुके हैं, महावैय्याकरण पाणिनि ने इन्हीं पाकिस्तानी लोगों के लिये आयुधजीवी संघ शब्द का प्रयोग किया है जो आयुधों, शस्त्र अस्त्रों द्वारा मारकाट करके समाज में गुण्डागर्दी करके अनपढ़ गंवारों की तरह आजीविका करते हुये जीवन यापन करते हैं। शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति की भावना से परामुख इन लोगों का तबका ही इस्लाम का शिकार बन गया जो शिक्षा प्राप्त करने में सिर न खपा कर गुण्डागर्दी द्वारा अपना प्रभाव लोगों पर जमा कर लूटपाट करके जीवन की ऐश व आराम प्राप्त करने का सस्ता तरीका बतलाता है। जो इस्लाम दूसरों को काफिर होने का फतवा देकर उन्हें मारकर जन्नत (स्वर्ग) और ७२ हूरों के साथ कामवासना करने का सस्ता और शैतानियत का रासता बतलाता है।

उत्तरप्रदेश के आदरणीय मुख्यमन्त्री श्री आदित्यनाथ योगी जी ने इनका इलाज करने का ठीक तरीका बतलाया है, "लातों के भूत बातों से नहीं मानते।" वेद भगवान् ऐसे लोगों के लिये ठीक ही कहता है, "अपघ्नतोऽरावण:।" श्रीमद् भगवद् गीता के उपदेश को चरितार्थ करने का सही मौका भारतीयों के लिये आ गया है, "तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धायकृतनिश्चय:।" विस्तार भय से अधिक नहीं लिख रहे।

अब अति हो चुकी है, युद्ध के सिवाय कोई और तरीका सोचने के लिये व्यर्थ समय गंवाना है। भारत सही धर्म (न्याय) और सत्य के मार्ग पर है। अत: जय निश्चित रूप से भारत की ही होगी, "यतो धर्मस्ततो जय:।" दुष्ट, असुर, राक्षस रावण का वध करने के लिये श्री महाराज रामचन्द्र जी को भी युद्ध करना ही पड़ा था। दुष्ट कौरवों का वध करवाने के लिये भी श्रीकृष्ण जी महाराज को सुदर्शन चक्र चलाना ही पड़ा था। अब और अधिक सोचने और उपदेश की आवश्यकता नहीं है। अब नहीं तो फिर कभी नहीं। इन म्लेच्छों का सर्वनाश होना ही चाहिये।

युद्ध हो गया। भारत ने आतंकियों और उनके पोषकों को घुटने पर ला दिया। बीच में दो देशों ने अपनी चौधराहट स्थापित करने के लिये तथा आर्थिक स्वार्थसिद्धि के लिये प्रयास किये, किन्तु भारत ने स्पष्ट कह दिया कि तुम्हें बीच में टांग अडाने की आवश्यकता नहीं है। पाकिस्तान को पता चल गया कि वह भारत के सामने कुछ भी हैसियत और औकात नहीं रखता। भारत की वीर सेना ने अपने शौर्य का परचम लहरा दिया केवल २३ मिनटों में दुश्मन को उड़ा दिया। देश की सेना जनता की बधाई और सम्मान की पात्र है। ऐसे अभेद्य अस्त्रों के निर्माण के लिये आदरणीय प्रधानमन्त्री भी बधाई के पात्र हैं, देश के विकास को कितनी ऊँचाई तक पहुंचा दिया यह समय राजनीति करने का नहीं है। ऑपरेशन सिन्दूर सचमुच देश के मस्तक पर तिलक है।

अब श्री नरेन्द्र मोदी जी को खुला अवसर है, देश को पूर्ण उत्कर्ष तक ले जाये। आर्यसमाज की पारी इसके बाद आयेगी। आर्यसमाज को अपनी पूरी शक्ति लगाने का सही समय होगा। जब देश में निष्कटंक एवं राज्य संविधान के अनुसर गणतन्त्र के रूप में प्रतिष्ठित हो जायेगा, पक्ष और विपक्ष निखर कर शुद्ध राजनीति करने लगेगा, तब आर्यसमाज का कार्य भारतीयों को यह तथ्य याद दिलाने का होगा कि ऐ भारतीयों! तुम्हारा ही असली नाम आर्य है पश्चिम के आक्रान्ताओं ने तुम्हारा नाम बिगाड़ कर तुम्हें हिन्दू कहना प्रारम्भ किया था। हिन्दुओं को यह पहचान और ऐतिहासिक तथ्य याद दिलाने के लिये ५० वर्ष की अवधि रखी जा सकती है। विधर्मों में परिवर्तित हुये लोगों को भी ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर उनको उनका मूल रूप समझाकर याद दिलाकर उनकी घरवापसी की जा सकती है। **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** कोई मुंगेरीलाल का हसीन स्वप्न नहीं है। पांचवीं शताब्दी तक गुप्तवंशीय राजकाल तक समूचा भारत एक ही सांस्कृतिक सूत्र में बंधा था। बौद्ध और जैन धर्म आदि इसी देश में बने और पनपे, वे कोई विदेशी नहीं है, इसी देश की सांस्कृतिक उपशाखायें हैं। उनसे देश की अखण्डता को न कभी कोई खतरा था और न कभी होगा। उनके आचार्यों ने अहिंसा परमोधर्म: का पाठ विश्व को पढ़ाया है, जो भारत की ही संस्कृति का एक अंग है। भारत ने केवल यवनों की या अंग्रेजों की दासता झेली है, उसी से मुक्ति चाहिये। अब भारत का और कोई प्रतिद्वन्दी नहीं है, केवल पाकिस्तान है, उसको ठिकाने लगा दिया जाये तो भारतीय मुसलमान देश की एकता और अखण्डता में कोई बाधक नहीं बनेंगे। इस अवधि के दौरान आर्य युवकों को समाज सेवा के कार्यों में नि:स्वार्थ भाव से क्रियात्मक कार्यों में उतरना होगा, सूची बड़ी लम्बी है, फिर कभी देंगे।

शहीद आदिल और उमर अबदुल्ला जैसे शान्तिप्रिय भी हैं "आर्य" की परिभाषा स्वामी दयानन्द ने स्वमन्तव्य

प्रकाश में २१वें अंक पर लिखा है जैसे आर्य श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हूँ। दुष्ट मनुष्य को तो कोई भी व्यक्ति स्वीकार नहीं करता, चाहे वह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय में हो। सभी देशों में, सभी सम्प्रदाय और धर्मों में श्रेष्ठ मनुष्य ही अभीष्ट हैं, दुष्ट मनुष्य तो सर्वत्र दण्डनीय और बहिष्कार की कोटि में आते हैं। अतः जब सब मनुष्य धृतिमान्, क्षमाशील, दमनशील अस्तेय (चोरी न करना) शौच (पवित्र) इन्द्रियनिग्रहधन, (सदाचारी), बुद्धिमान्, विद्यावान, सत्यनिष्ठ (झूठ न बोलने वाले, सत्यभाषी) क्रोधरहित (सब से प्रेम करने वाले) आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणों से सम्पन्न होंगे, इन नियमों का पालन धर्म मानकर करने वाले होंगे तो आर्य राष्ट्र में ऐसे ही तो मनुष्य चाहिये, यही तो वे श्रेष्ठ गुण है जिन गुणों से सम्पन्न व्यक्ति को ऋषि दयानन्द आर्य मानते हैं। यदि कोई सम्प्रदाय अपने अनुयायियों को इन गुणों से विपरीत, दुर्गुणों की शिक्षा देता है तो वह दुष्ट और दस्यु है, अनार्य है। ऐसे गुण सम्पन्न नागरिकों को ऋषि दयानन्द आर्य मानते हैं और ऐसे नागरिकों वाले राष्ट्रों को, देशों को सम्पूर्ण भूमि पर छा जाने की बात करते हैं। ऐसे नागरिकों का निर्माण आर्यसमाज ने करना है, दुष्टतापूर्ण आसुरी तत्त्वों को विश्व से समाप्त कर देना है।

डोनाल्ड ट्रम्प और तुर्की तो बड़े कुख्यात कृतघ्न सिद्ध हुये, समूचा भारत इन को समुचित उत्तर दे रहा है। ऑपरेशन सिन्दूर के बाद अब पी.ओ.के. और आतंकवाद, यही दो मुद्दे बच गये हैं। पी.ओ.के. की जनता भारत में मिलने के लिये बहुत समय से स्वयम् उत्सुक है, उन्हें भारत का केवल सकारात्मक संकेत चाहिये जो सही समय की प्रतीक्षा में है। आतंकवाद को धूल चटाने के लिये भारत की वीर सेना को एक बार खुला हाथ मिल जाये तो पाकिस्तानी सेना की वही दुर्दशा हो जाये जो सन् १९७१ में बांगला देश में हुई थी। वैसे पाकिस्तान को नाक रगड़ वाने के लिये तो सिन्धु जल सन्धि को निरस्त करके रखना ही पर्याप्त है। आतंकवादी जैसे दुष्ट लोगों को भारतीय प्राचीन इतिहास में ''म्लेच्छ'' कहा गया है, इनको खदेड़कर धूलि में मिलाना ही स्थायी उपाय है ताकि इनका अंश भी देश में न बचे और देश श्रेष्ठ लोगों से आबाद रहे, ''म्लेच्छाः मा भूमेति।'' यही आर्यों का साम्राज्य है। इसी तथ्य का वेद ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, अपघ्नतोऽरावणः'' मन्त्र में उपदेश देता है। यह कोई स्वप्न या कल्पना नहीं है,यह सीधा राजमार्ग है, जो स्वामी दयानन्द ने दिया है, बतलाया है जिस का आधार वेदों से लेकर भारत का समूचा प्राचीन इतिहास है। हमारी पूरी लेखमाला का यही आधार है। राम-रावण युद्ध और श्रीकृष्ण जी के नेतृत्व में हुआ कौरव-पाण्डव युद्ध इन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित है। भारतीय हथियारों के सामने विदेशी हथियार फुसफुसा गये। पूरी पिक्चर तो अभी बाकी है देखते जाना घर में घुस कर मारेंगे।

देश की सम्प्रभुता में बाधा डालने वाली छोटी, मोटी घटनायें बाहर से और अन्दर से भी होती रहती है। भारत जैसे महान् देश में उनकी दाल नहीं गलेगी। कुछ समय अवश्य लगेगा, देश निश्चित रूप से निर्बाध सम्प्रभु राष्ट्र बनेगा। वही समय होगा जब आर्यसमाज को पूरी शक्ति के साथ ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' विश्व की समग्र भूमि को श्रेष्ठ आर्यों श्रेष्ठ मनुष्यों से परिपूर्ण भूमि बनाने के लिये जीवन मरण की बाजी लगाकर कार्यक्षेत्र में उतरना होगा। तब मैदान में कोई बाधक तत्त्व नहीं होगा, दयानन्द के भक्तों को तब भारतीयों को केवल यह ऐतिहासिक तथ्य याद दिलाना होगा कि भारतीय बन्धुओं! तुम्हारा असली नाम आर्य है। इतना बोध दिलाने के कार्य में ५० वर्ष भी लग जायें तो आज २०२५ के बाद ५० वर्ष २०७५ से परे होंगे और यह वही समय है जब २०० वर्ष पहले ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश लिखा था, जिसमें आर्यों के सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य का मिशन दिया था। अतः सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज दोनों की २००वीं वर्ष शताब्दी मनाई जायेगी, जिसका एक ही जयघोष होगा, ''**आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की जय।**''

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

– डॉ. ज्वलन्त कुमार

मीमांसक जी की सारस्वत साधना

मीमांसक जी का रचना संसार परिमाण तथा शास्त्रीय वैशिष्ट्य दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है-

१. माध्यन्दिन संहितायाः पदपाठः

वि.सं. १४७१ के विशिष्ट हस्तलेख तथा अन्य विविध मुद्रित वा हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर यजुर्वेद के पदपाठ के आदर्श संस्करण का सम्पादन तथा प्रकाशन-१९७१ ई.। राजस्थान सरकार ने इसके लिए तीन वर्ष तक १५०/-रू. मासिक सहायता प्रदान की थी। प्रकाशित होने पर उ.प्र. शासन से पुरस्कृत।

२. यजुर्वेद भाष्य संग्रह

ऋषि दयानन्दकृत यजुर्वेद के जो अंश पंजाब की शास्त्री-परीक्षा में स्वीकृत थे उनका सम्पादन-१९६० ई.। इसके परिशिष्ट में आधुनिक वैयाकरणों द्वारा अशुद्ध माने गये कतिपय शब्दों का साधुत्व विवेचन भी किया गया है।

टंकारा ट्रस्ट में कार्य करते हुए मीमांसक जी ने गोपथ ब्राह्मण के कुछ भाग का अनुवाद और व्याख्या का कार्य भी किया था।[१३]

३. ऋषि दयानन्द की पद प्रयोग शैली

ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य में पचासों ऐसे प्रयोग मिलते हैं, जिन्हें साम्प्रतिक वैयाकरण अशुद्ध मानते हैं। यजुर्वेद भाष्य पर कार्य करते हुए उक्त प्रकार के शब्दों को बिना शुद्धता दर्शाये वेदभाष्य को प्रकाशित करना मीमांसक जी ने उचित नहीं समझा। अतः आधुनिक वैयाकरणों द्वारा अशुद्ध माने जाने वाले शब्दों का वर्गीकरण करके पाणिनीय व्याकरण के अनुसार उनका साधुत्व दर्शाया गया। इसे ऋषि दयानन्द की पद प्रयोग शैली के नाम से पुस्तक प्रकाशित की गई। प्रथम संस्करण १९६० ई., द्वितीय संस्करण १९९५ ई.।

४. वेद-श्रुति-आम्नाय संज्ञा मीमांसा (द्वितीय संस्करण-२०४४ वि.सं.)।

५. वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन प्रकार (द्वि.-तृ. सं.-१९८५, २००९ ई.)

६. सामवेद के प्रथम मन्त्र का भाष्य

यह भाष्य 'टंकारा पत्रिका' (जुलाई-अगस्त १९६१ ई.) में प्रकाशित हुआ। भाष्य के आरम्भ में मीमांसक जी ने 'आमुख' लिखकर अपनी भाष्यलेखन विषयक दृष्टि को स्पष्ट किया। भाष्य का क्रम इस प्रकार है-प्रथम मूल मन्त्र, पदपाठ, पदार्थ, अन्वय इसके बाद अधियज्ञपरक अर्थ, अधिदैवतपरक अर्थ तथा अध्यात्मपरक अर्थ देकर अन्त में भावार्थ के रूप में मन्त्र को स्पष्ट किया गया है।

७. वेदसुधा

इसमें मीमांसक जी द्वारा व्याख्यात कतिपय वेद मन्त्रों का संग्रह है-१९७० ई.।

८. अथर्ववेद संहिता का सम्पादन

'परोपकारिणी सभा अजमेर' में १९४२ ई. से १९४५ ई. तक कार्य करते हुए मीमांसक जी ने इस संहिता के षष्ठ संस्करण का सम्पादन किया। परोपकारिणी सभा से पूर्व मुद्रित संस्करणों में ऋषि, देवता और छन्द का निर्देश नहीं था। इनका संयोजन पहली बार किया गया।

९. सामवेद संहिता का सम्पादन

परोपकारिणी सभा के द्वारा ही प्रकाशित इस वेद के पूर्व संस्करणों में छपे ऋषि, देवता तथा छन्द आदि में जो भूलें थी उन्हें दूर कर इस षष्ठ संस्करण में मीमांसक जी द्वारा शुद्ध मुद्रित किया गया है।

मीमांसक जी ने इन दो संहिताओं के प्रकाशन के बाद ऋषि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य के कुछ अंशों का

हस्तलेखों से मिलान करके शुद्ध मुद्रण हेतु प्रेस कॉपी तैयार कर मुद्रण कार्य प्रारम्भ किया। दो फार्म (१६ पृष्ठ) ही छप पाये थे-उनमें कुछ स्थानों पर मीमांसक जी की टिप्पणियों को देखकर 'सभा' के मन्त्री श्री हरविलास शारदा ने इस कार्य को बन्द कर दिया। श्री शारदाजी की यह सोच थी कि ऋषि दयानन्द के जीवन काल में जो ग्रन्थ जैसा छपा है उसे वैसा ही छापा जाय। मीमांसक जी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में उनके लिपिकरों, प्रेस कर्मचारियों तथा अन्य कारणों से अशुद्ध पाठों को शुद्ध कर सुसम्पादित कर प्रकाशित करना चाहते थे। सो न हो सका।[१४]

१०. शिक्षा शास्त्र का इतिहास

पं. युधिष्ठिर मीमांसक के शिष्य डॉ. धर्मवीर विद्यावारिधि ने- **१. वर्णोच्चारण शिक्षा चिन्तनम्, २. शिक्षा-कल्प-आर्ष चिन्तनम्**- ये दो पुस्तकें सम्पादित तथा प्रकाशित की है। इन दोनों पुस्तकों में नामानुरूप विषयों पर अनेक विद्वानों के लेख संकलित हैं। इन दोनों पुस्तकों में शिक्षा शास्त्र का इतिहास २० पृष्ठों में मुद्रित हैं, जिनके लेखक श्री युधिष्ठिर मीमांसक जी हैं। (प्रथम संस्करण-२००० ई., प्रकाशक-प्राच्य विद्या अनुसंधान केन्द्र पाणिनि धाम, तिलोरा, पुष्कर क्षेत्र अजमेर-राजस्थान)।

११. दयानन्द ग्रन्थ उद्धरण सूची

१९५९-१९६१ ई. में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा में अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष के रूप में मीमांसक जी ने स्वामी दयानन्द विरचित ४० ग्रन्थों में उद्धृत तथा व्याख्यात २५ सहस्र वचनों की सूची तैयारी की। लगभग एक लाख चिटें उद्धरणों की बनीं। सब चिटों को वर्गानुसार छांटकर अकारादि क्रम से प्रेस कॉपी तैयार करनी प्रारम्भ की। उनको अकारादि क्रम से व्यवस्थित करके टंकारा पत्रिका में छपवाना आरम्भ किया। इस सूची में परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के विभिन्न संस्करणों में उद्धरणों के जो पाठ बदले गये थे, उनका भी निर्देश टिप्पणी में करना पड़ता था। 'टंकारा पत्रिका' वैदिक यन्त्रालय अजमेर से प्रकाशित होती थी। उसमें अभी उद्धरण सूची के कुछ ही पृष्ठ छपे थे कि मीमांसक जी की टिप्पणियों से रुष्ट होकर परोपकारिणी सभा ने सूची का प्रकाशन बन्द कर दिया।[१६]

१२. महाभाष्य (हिन्दी व्याख्या-भाग-१, भाग-२, भाग-३)

पतंजलि मुनि विरचित पाणिनीय व्याकरण का शीर्षस्थ ग्रन्थ महाभाष्य के दो अध्यायों तक की विशद व्याख्या-१९७२ से १९७६ के मध्य प्रकाशित। उ.प्र. शासन से पुरस्कृत।

१३. मीमांसा-शाबर भाष्य (हिन्दी व्याख्या)

जैमिनि मुनि प्रोक्त मीमांसा शास्त्र पर सबसे प्राचीन भाष्य शबर स्वामी का है। मीमांसक जी ने शाबर भाष्य के तीन चौथाई भाग-९ अध्याय तक की हिन्दी व्याख्या 'आर्षमतविमर्शिनी' नाम से लिखी है जो ७ भागों में छपी। प्रथम भाग १९७७ ई. में तथा सप्तम भाग १९९३ ई. में प्रकाशित हुआ। मीमांसा दर्शन का सम्बन्ध विशेषत: वैदिक कर्मकाण्ड से है। आपने प्रथम भाग में 'उपोद्घात' के रूप में 'शास्त्रावतार मीमांसा', 'वेद-श्रुति-आम्नाय संज्ञा मीमांसा', श्रौत यज्ञ मीमांसा आदि निबन्धों के अन्तर्गत आने वाले ६५ विषयों पर विस्तार से १८८ पृष्ठों में चर्चा की है। पण्डित जी ने विविध परिशिष्टों तथा सहस्रों टिप्पणियों से युक्त ढाई हजार से भी अधिक पृष्ठों (२५८५ पृष्ठ) में मीमांसा शास्त्र के ३/४ भाग की सुविस्तृत व्याख्या लिखकर अपने मीमांसक नाम की अन्वर्थता सिद्ध कर दी।

१४. विदुर-नीतिः (महाभारत- उद्योगपर्व-अन्तर्गता)

पदार्थ-विस्तृतव्याख्या-सहिता। पृष्ठ-४०३, प्रथम संस्करण-२०२८ वि.सं. (१९६८ ई.)।

१५. श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम्

बालकाण्डम् (हिन्दी अनुवाद सहित), अनुवादक

श्री पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक, प्रथम संस्करण-२०२५ वि.सं., द्वितीय संस्करण-२०५२ वि.सं. (१९९६ ई.)। बृहद् आकार-पृष्ठ-२१८।

१६. हंस गीता-सानुवाद प्रकाशित-२०२६ वि.सं.।

(महाभारत शान्तिपर्व, अध्याय २९९ के अन्तर्गत)

१७. संस्कृत धातुकोष:- द्वितीय संस्करण-१९९६ ई.।

१८. शब्द रूपावली (बिना रटे शब्द रूपों का ज्ञान कराने वाली) तृतीय सं.-१९८५ ई.।

१९. संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि (द्वितीय भाग) प्र. सं.-२०२६ वि.।

२०. संस्कृतवाक्यप्रबोध:

(अबोधनिवारणस्थ आक्षेपों के उत्तर सहित)

आज बाजार में English speaking Course के लिए अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। आज से १४४ वर्ष पूर्व संस्कृत भाषा को वार्तालाप (बोलचाल) तथा दैनिक व्यवहार की भाषा बनाने के लिए ऋषि दयानन्द में संस्कृत वाक्य प्रबोध की रचना की थी। इसका प्रथम संस्करण फाल्गुन शु. ११ वि.सं. १९३६ में प्रकाशित हुआ। इसमें व्याकरण की अशुद्धियों को दर्शाने के लिए पं. अम्बिकादत्त व्यास ने अबोध निवारण पुस्तक छपवाई थी। उसमें लगभग ५० आक्षेप थे, जिनमें से ३ तीन आक्षेपों का उत्तर ऋषि दयानन्द ने एक पण्डित के नाम से दिया अथवा दिलवाया था। शेष आक्षेपों का उत्तर मीमांसक जी ने पाणिनीय व्याकरण एवं आर्ष वाङ्मय के अनुसार दिया। यह उत्तर संस्कृत-वाक्य-प्रबोध का एक बृहद् संस्करण प्रकाशित करके दिया-प्रथम संस्करण १९६९ ई., द्वितीय संस्करण १९८६ ई., चतुर्थ संस्करण २०१० ई.। ऋषि दयानन्द की इस पुस्तक को श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा में रखवाना चाहते थे। उप कुलपति डॉ. मंगलदेव शास्त्री भी सहमत थे।'' उस पर काशी के पण्डितों ने कहा कि यह ग्रन्थ बहुत अशुद्ध है। स्वामी दयानन्द के जीवन काल में ही पं. अम्बिकादत्त व्यास ने इस पर आक्षेप किये थे, उनका न स्वामी दयानन्द ने उत्तर दिया और न किसी अन्य ने। अत: ऐसा अशुद्ध ग्रन्थ परीक्षा में नहीं रखा जा सकता।''[१७] इस घटना का ज्ञान होने पर मीमांसक जी ने अबोध निवारणस्थ समस्त आक्षेपों का उत्तर इस पुस्तक में पहली बार दिया है।

२१. वेदाङ्ग प्रकाश

संस्कृत पठन-पाठन की परम्परा को सुप्रचलित करने के लिए ऋषि दयानन्द ने वेदाङ्ग प्रकाश के १४ भाग प्रकाशित करवाये। १९७८-१९४९ में आर्य साहित्य मण्डल अजमेर में कार्य करते हुए मीमांसक जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती विरचित व्याकरण सम्बन्धी वेदाङ्ग प्रकाश के १४ भागों पर संशोधन कार्य किया। (वर्णोच्चारण शिक्षा का संशोधन और सम्पादन कार्य सम्भवत: मीमांसक जी ने नहीं किया, क्योंकि 'यमों' के स्वरूप पर उनका ग्रन्थकार से मतभेद था)। १९५० ई. में मीमांसक जी 'आर्य साहित्य मण्डल' का कार्य छोड़कर गुरुजी (पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु) के इच्छानुसार काशी पहुँच गये। आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से मीमांसक जी द्वारा संशोधित 'वेदाङ्ग प्रकाश' के सभी भाग मीमांसक जी की अनुपस्थिति में छपे, अत: ये ग्रन्थ शुद्ध नहीं छप सके।[१८]

२२. निरुक्त समुच्चय:- वररुचिकृत यह नैरुक्त सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ है। निरुक्त टीकाकार स्कन्दस्वामी ने इसे बहुत स्थानों पर उधृत किया है। इसके एकमात्र अशुद्धि-बहुल व त्रुटित हस्तलेख से सम्पादन कार्य किया गया है। 'ओरियण्टल मैगजीन' (लाहौर) में प्रथम बार प्रकाशित हुआ-१९३८ ई., द्वितीय संस्करण १९६८ ई., तृतीय संस्करण १९८३ ई., चतुर्थ संस्करण-२००३ ई.।

२३. भागवृत्ति-संकलनम्- अष्टाध्यायी की अति प्राचीन विलुप्त 'भागवृत्ति' नाम्नी वृत्ति के शतश: पाठ प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। मुद्रित तथा लिखित

लगभग २०० ग्रन्थों का पारायण करके इस वृत्ति के पाठों का संकलन करके टिप्पणियों के सहित प्रकाशित किया है। प्रथम संस्करण 'ओरियण्टल मैगजीन' (लाहौर) १९४० ई., परिष्कृत संस्करण (सारस्वती सुषमा, काशी)१९५५ ई., परिवर्धित संस्करण १९६५ ई.।

२४. दशपाद्युणादिवृत्तिः- पाणिनीय व्याकरण सम्प्रदाय में यह वृत्ति अत्यन्त प्रामाणिक मानी जाती है, परन्तु इसके हस्तलेख अति दुर्लभ हो गये हैं। अत्यन्त प्रयास से इसके विविध स्थानों से अनेक हस्तलेख उपलब्ध करके शतशः अन्यग्रन्थों के साहाय्य से इस वृत्ति का सम्पादन किया गया है। आरम्भ में ५५ पृष्ठों में संस्कृत भाषा में उणादिसूत्र और उनकी वृत्तियों का इतिहास दिया है। यह वृत्ति राजकीय संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी (वर्तमान संस्कृत विश्वविद्यालय) की 'सरस्वती-भवन ग्रन्थावली' में प्रकाशित हुई है-१९४२ ई., द्वितीय संस्करण १९८७ ई.।

२५. शिक्षा-सूत्राणि- आचार्य आपिशलि, पाणिनि और चन्द्रगोमी के मूलभूत शिक्षासूत्रों का सम्पादन तथा प्रकाशन-१९४६ ई., परिष्कृत-परिवर्धित संस्करण-१९६७ ई., तृतीय संस्करण-१९९६ ई.।

२६. क्षीर-तरङ्गिणी- पाणिनीय धातुपाठ के औदीच्य पाठ पर क्षीरस्वामी विरचित क्षीरतरङ्गिणी नाम्नी सबसे प्राचीन व्याख्या का सम्पादन। इसमें लगभग ७००० महत्त्वपूर्ण टिप्पणियों में अनेक विषयों का स्पष्टीकरण है। आरम्भ में संस्कृत में ४० पृष्ठों में पाणिनीय धातुपाठ और उनके व्याख्या-ग्रन्थों का इतिहास लिखा गया है- १९५८ ई., द्वितीय संस्करण (पुनः परिशोधित)-१९८५ ई.।

२७. दैवं पुरुषकारवार्त्तिकोपेतम्- पाणिनीय धातुपाठ पर प्राचीन अति प्रामाणिक ग्रन्थ का विविध प्रकार की लगभग ६५० टिप्पणियों के साथ सम्पादन तथा प्रकाशन-१९६२ ई.।

२८. काशकृत्स्न-धातुपाठ- काशकृत्स्न धातुपाठ की चन्नवीर कविकृत कन्नड टीका का संस्कृत रूपान्तर तथा सम्पादन-१९६५ ई.।

२९. काशकृत्स्न-व्याकरणम्- काशकृत्स्न-व्याकरण का परिचय, तथा उपलब्ध १३५ सूत्रों की संस्कृत में व्याख्या-१९६५ ई., द्वि.सं.-१९९५ ई.। पुस्तक रूप में आने से पूर्व साहित्य पत्रिका (पटना) में शोध निबन्ध के रूप में प्रकाशित-१९६०-६१ ई.।

३०. उणादि-कोष- स्वामी दयानन्द सरस्वती विरचित पंचपादी उणादिपाठ की उणादिकोष नाम्नी व्याख्या का सम्पादन। विविध टिप्पणियों सूचियों से युक्त प्रथम संस्करण-१९७४ ई., तृतीय संस्करण-२००० ई.।

३१. कात्यायन-गृह्यसूत्र- अनेक हस्तलेखों की सहायता से सम्पादन-१९८३ ई.।

३२. धातुप्रदीप- पाणिनीय धातुपाठ की मैत्रेयरक्षित विरचित वृत्ति-१९८६ ई.।

३३. श्रौतयज्ञ-मीमांसा- (संस्कृत-हिन्दी) इसमें अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधान्त श्रौतयज्ञों के उद्‌भव, विकास तथा उनमें परिवर्तन, श्रौतयज्ञों का मूल प्रयोजन और पशुयागों के सम्बन्ध में विस्तार से मीमांसा की है- १९८७ ई., द्वितीय संस्करण-२००४ ई.।

३४. वैदिक छन्दोमीमांसा- इसमें वैदिक वाङ्मय से सम्बन्ध रखने वाले ५-६ उपलब्ध छन्दःशास्त्रों के अनुसार सभी छन्दों के भेद-प्रभेदों के लक्षण और उदाहरण दर्शाये हैं। साथ में छन्दोज्ञान की वेदार्थ में उपयोगिता, छन्दःपरिवर्तन के कारण, और छन्दःशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास आदि अनेक विषयों का समावेश किया है- १९६० ई., द्वितीय संशोधित परिवर्धित संस्करण-१९७९ ई.।

- **क्रमशः**

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीवों को अत्यन्त सुख पहुँचावें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

पुरुष अध्याय - यजुर्वेद ३१

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्या

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी श्रृंखला में यजुर्वेद-३१ 'पुरुष अध्याय' की व्याख्यानमाला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।

-सम्पादक

हम देख रहे थे, हमें जो संसार हमारे सामने मिला है, उस संसार को जानने और समझने के लिए जहाँ संसार को हम देखते हैं, वहीं पर इस संसार के बनाने वाले का भी ज्ञान इस संसार से हमें मिलना चाहिए। हमने देखा था कि इस संसार के जो नियम हैं वो संसार के अपने बनाए हुए नहीं है। उसमें चैतन्य नहीं है और नियम बनाने वाला चेतन होना चाहिए। तो इस दृष्टि से हमें संसार का जब ज्ञान होता है तो संसार के ज्ञान के साथ-साथ हमें संसार के बनाने वाले का भी ज्ञान हो जाता है। जो शब्द हैं, वो कैसे हमें इसका बोध कराते हैं उसको हम देखें तो यह जो यजुर्वेद का ३१वाँ अध्याय है जिसको हमने पुरुष अध्याय के रूप में जाना था इसके ऊपर जो विशेष जानने योग्य शब्द हैं, मन्त्रों से पहले जिनको पढ़ा जाता है, वो ऋषि, देवता, छन्द और स्वर हैं।

ऋषि को हम संक्षेप में समझें जिन्होंने मन्त्रों के अर्थ पर विचार किया है, उन अर्थों का दूसरे के लिए उपदेश दिया है। हम उन्हें ऋषि कह रहे हैं और मन्त्र में जिस विषय का प्रतिपादन किया है, जो विषय बताया गया है, उस विषय को हम जिस शब्द से हम जानते ओर समझते हैं, वो शब्द हम 'देवता' के रूप में जानते हैं। वह शब्द देवता के रूप में सामने आता है और यह मन्त्र की रचना है, वो रचना जिस तरह से हुई है और उसे जैसे बोलना चाहिए, उसको हम छन्द और स्वर कहते हैं। इसकी चर्चा हम फिर किसी अवसर पर देखेंगे विस्तार से। यहाँ पर इस अध्याय का जो मन्त्र है, उसके शब्दों पर विचार करते हैं। मन्त्र है-

ओ३म् सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

संस्कृत भाषा के सामान्य जानने वाले व्यक्ति के सामने जब ये शब्द आते हैं तो उनका जो सीधा-सीधा मोटा अर्थ बनता है, वो देखने से हमारी समझ में आ जाएगा। संस्कृत में सहस्त्र शब्द जो है वो हजार के लिए आता है। तो शब्दों के अर्थ पर जब विचार करते हैं तो सहस्त्र शीर्षा, हजारों सिर, सहस्त्र पात, हजारों पैर। तो सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। यहाँ पुरुष एक वचन है अर्थात् जिस पुरुष की यहाँ चर्चा की जा रही है वो एक होना चाहिए, बहुत नहीं और इस संसार में जो दिखाई देने वाले पुरुष हैं, प्राणी हैं, वो एक नहीं है। वो एक तरह के होने पर भी एक नहीं है। वो अनेक प्रकार के हैं तो यहाँ पर हमारे मन में एक प्रश्न उठ सकता है कि हम पुरुष की बात कर रहे हैं तो संसार में जो दिखाई दे रहा है तो उसकी ही बात कर सकते हैं। किन्तु ऐसा है नहीं, क्योंकि यहाँ जो संबोधन किया गया है, वो एक पुरुष की बात कर रहा है और इस मन्त्र का देवता भी इसलिए 'पुरुषः' है। यदि बहुत अभिप्रेत होते तो बहुवचन होना चाहिए था। मन्त्र में ही बहुवचन हो जाता, ऊपर न होता, लेकिन ऐसा है नहीं, क्योंकि इस मन्त्र में जितने भी शब्द हैं वो एक को बताने वाले हैं तो हजार सिर वाला, हजार आँखों वाला, हजार पैरों वाला

स भूमिः सर्वतो स्पृत्वा और उसने भूमि को सब जगह से स्पर्श किया हुआ है जब हमारे जैसा एक मनुष्य इस पृथ्वी पर चलता है, तो वह बहुत बड़ा होने पर भी पृथ्वी के बहुत थोड़े से अंश का स्पर्श कर रहा होता है। स भूमिः सर्वतो स्पृत्वा वह भूमि को सब जगह से स्पर्श कर रहा है और वह दशाङ्गुलम् अत्यतिष्ठत् जो भी इसके भाग हैं, अवयव हैं,हिस्से हैं, वो उनका अधिष्ठाता है, उनकी व्यवस्था करने वाला है, उनसे ऊपर है।

इस मन्त्र पर जब हम विचार करेंगे तो सहस्रशीर्षा, सहस्राक्षः सहस्रपात् सामान्य लोग जो इसका अर्थ करते हैं कि वो हजार सिर वाला है, हजार पैर वाला है, हजार आँखों वाला है तो जैसा मैंने निवेदन किया कि 'सः' वह एकवचन वाला है। अर्थात् वह ऐसा पुरुष होना चाहिए जो अकेला हो। उस अकेले पुरुष की यहाँ पर बात हो रही है। हम संसार में यदि मनुष्य को पुरुष कहें तो भी बहुत हैं और जिस अर्थ में यहाँ पुरुष शब्द का प्रयोग हुआ है, उस अर्थ में पुरुष कहें तो भी अनेक हैं। जैसे संस्कृत में प्रचलन है, पुरी में, स्थान में रहने के कारण से हम इसे पुरुष कहते हैं। तो यह 'पुरी' जो है शरीर है। इस शरीर में जो रहता है, उसे हम पुरुष कहते हैं, लेकिन संसार में जब हम देखते हैं तो शरीरधारी एक नहीं है। शरीरधारी तो मनुष्य भी अनेक हैं और प्राणियों के रूप में देखा जाए तो असंख्य हैं, बहुत हैं। तो यहाँ किसी मनुष्य जैसे पुरुष की बात नहीं हो रही। बात पुरुष की तो अवश्य हो रही है और पुरुष की हो रही है, इसका मतलब, जैसे इस पुरी में जिसकी सत्ता है, वो पुरुष है। वैसे ही इस बड़ी पुरी में जिसकी सत्ता है वह भी पुरुष है। इसका जब हम अर्थ करते हैं, शब्दों का तो अर्थ का निश्चय करने के लिए हमें विभक्ति-वचन लगाने पड़ते हैं। कोई भी शब्द जब विभक्ति के बिना होता है, इकट्ठा समस्त होता है तो इसका अर्थ करते समय उसका विच्छेद अर्थ के अनुकूल किया जाता है। अर्थात् जैसा अर्थ है, वैसा उसका विच्छेद होना चाहिए। या हमें विच्छेद करते समय अर्थ को ध्यान में रखना चाहिए ताकि उस शब्द के साथ विभक्ति वचन वगैरह वही लगे। तो यहाँ पर हमारे मन में दो बातें आती हैं- जैसे सामान्य लोग समझते हैं कि वो पुरुष है, उसकी हजार आँखें हैं हजार पैर हैं, हजार सिर हैं। जो सामान्य हमारी बुद्धि में आने वाला जो अर्थ है, यदि हम इसी का ग्रहण करें तो घटेगा नहीं। एक ऐसे पुरुष की कल्पना कैसे करें, जिसका सिर एक हो, उस पर एक ही आँख हो, ऐसा पुरुष जिसका शरीर तो एक हो, जिसमें पैर भी एक ही हो, ऐसा पुरुष जिसमें सब अवयव जो हैं वो एक तरह के हों। जो मस्तिष्क में हमारे पुरुष का चित्र है वो घटित नहीं होगा।

ऋषि दयानन्द सरस्वती इसका जो अर्थ करते हैं वो करते हैं 'शिरांसि अस्मिन्।' अर्थात् हजारों, लाखों, करोड़ों सिर जिसके अन्दर हैं। अर्थात् वह इन सिरों का स्वामी है और वह स्वामी इस तरह से है कि सारे के सारे जो सामर्थ्य है, सारी की सारी जो शक्ति है बुद्धि की वो उसे अन्दर सिमटी हुई है। तो 'शिरांसि अस्मिन्' जिसमें हजारों सिर हैं, जिसमें हजारों पैर हैं, जिसमें हजारों आँखें हैं। तो आँखों का सामर्थ्य जिनमें है तो उस इस ईश्वर की चर्चा यहाँ चल रही है। तो सहस्र शीर्षा पुरुषः, वह पुरुष हजार सिर जिसके अन्दर है ऐसा है अर्थात् जिसके सामर्थ्य में हजार सिर है या हजारों वाले जिसके अन्दर हैं। तो दोनों से जो अभिप्राय जाना जाता है, समझा जाता है वो इतना ही है कि उसके अन्दर सिर का जो सामर्थ्य है, वो विद्यमान है। इसके साथ और जो बड़ी बातें है, स भूमिँ सर्वत स्पृत्वा, वह इस दृश्यमान समस्त जगत् पर सर्वतः स्पृत्वा सब ओर से स्पर्श किए हुए है। अर्थात् कोई भी भाग, कोई भी हिस्सा बचा हुआ नहीं है। अत्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्। अब वह जो समस्त दृश्यमान जो जगत् है, संसार है, उससे भी वो 'अत्यतिष्ठत्' अतिरिक्त है, उसके बाहर है, उसके ऊपर है, उसका अधिष्ठाता है। इस तरह से मोटा अर्थ जब हम कर लेते हैं तब हमें यहाँ विचारने की बात जो आती है- पहली, यहाँ ऐसे पुरुष

की बात कर रहे हैं जो एक है, हम ऐसे पुरुष की बात कर रहे हैं जिसके अन्दर यह सब सामर्थ्य औरों से अधिक है, हम ऐसे पुरुष की बात कर रहे हैं जो इस संसार से बड़ा है। अब यदि हम विचार कर देखें कि जिन पुरुषों को हम जानते हैं, या जिन पुरुषों को हम देखते हैं वे न तो एक हैं और न उनके अन्दर कोई बहुत असीम सामर्थ्य है और न ही उनकी स्थिति, दशा, उनकी उपस्थिति इस संसार से बाहर तो हो ही नहीं सकती अन्दर भी पूरी नहीं है। तो पहली चीज जो हमारी समझ में आती है वो यह है कि यहाँ हम जिस पुरुष की बात कर रहे हैं वो पुरुष तो है लेकिन वह पुरुष सब मनुष्यों से, सब प्राणियों से भिन्न है और कितने अंशों में भिन्न है- उपस्थिति के अंश में भिन्न है, सामर्थ्य के अंश में भिन्न है, संख्या के अंश में भिन्न है। संख्या के अंश में भिन्न है तो वह एक है, बाकि सब अनेक हैं। वो सामर्थ्य के अर्थ में भिन्न है तो हमारे पास देखने, सुनने, चलने, सोचने का जो सामर्थ्य है और क्षमता है वो बड़ी सीमित है और जो देखने, सुनने, सोचने, चलने का सामर्थ्य है उसके अन्दर है वो बहुत है और उसकी जो उपस्थिति है, हमारी उपस्थिति देश-विशेष में किंचित मात्र है, थोड़ी है, लेकिन उसकी उपस्थिति किसी भी स्थान पर, कहीं पर भी सदा है, हट कर नहीं है। वह उसके साथ है और साथ ही नहीं परे भी है। इस बात को जब हम समझते हैं तो हमें मन्त्र पर विचार करने के लिए बहुत सारा अवकाश मिल जाता है। बहुत सारी सामग्री मिल जाती है और यह आग्रह हमारे अन्दर पैदा हो जाता है, सहज भाव से, सामान्य बुद्धि से कि ईश्वर पुरुष है, तो वह क्यूँ पुरुष है, क्योंकि वह इस संसार के अन्दर है। जैसे प्राणी के अन्दर जीवात्मा है, इसलिए जीवात्मा पुरुष है वैसे ही संसार के अन्दर वह परमात्मा है, इसलिए वह पुरुष है और हमारा जो पुरुषत्व है, हमारा जो अस्तित्व है, हमारी जो उपस्थिति है वो सीमित है, थोड़ी है, इसलिए यहाँ बात समझ में जो आती है, वह यह आती है कि वह कुछ-कुछ हमारे जैसा है और कुछ-कुछ वह हमसे भिन्न है। कुछ हमारे जैसा है, वह इन शब्दों से दिखाई देता है। वह पुरुष है, लगता है हमारे जैसा है। वह सिर वाला है तो लगता है हमारे जैसा है। वो पैरों वाला है, तो हमें लगता है वो हमारे जैसा है। वो आँखों वाला, देखने वाला है तो लगता है वो हमारे जैसा ही है और हम भूमि पर है, वो भी भूमि पर है तो वो भी ऐसा ही लगता है जैसे हमारे जैसा है। किन्तु उसकी जो विशेषतायें बतायी हैं, उनसे लगता है कि वह हमसे कुछ अलग है, हमसे कुछ भिन्न है। अर्थात् वह कुछ हम जैसा है और कुछ हमसे भिन्न है, यह बात जानते हुए जब हम इस मन्त्र का विचार करते हैं तो दोनों बातें अलग-अलग दिखाई देती हैं और उसका स्वरूप हमारे सामने प्रकट हो जाता है।

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है।

(सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

आर्यसमाज के दीवाने मास्टर आत्माराम अमृतसरी

श्री कन्हैयालाल आर्य

मास्टर आत्माराम अमृतसरी आर्यसमाज की स्पृहणीय विमल विभूति थे। उनके व्यक्तित्व में इतने गुणों का समावेश है कि उनके सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति उनका प्रशंसक बने बिना नहीं रह सकता था।

उदारता, सहृदयता, अनुशासनप्रियता, व्यवहार की शुचिता और सौजन्य की प्रतिमूर्ति मास्टर जी ने अधिकांश जीवन आर्यसमाज के सिद्धान्तों, उपदेशों और शास्त्रार्थ के माध्यम से इस प्रकार व्यतीत किया मानो ऋषि दयानन्द की विचारधारा को विश्व में प्रसारित करने के लिए वे एक प्रकाश स्तम्भ बन गये।

मास्टर आत्माराम जी का जन्म संवत् १९२४ विक्रमी आषाढ़ बदी १ तदनुसार १८ जून १८६७ को अमृतसर के प्रसिद्ध दानशील, कर्मनिष्ठ लुधियाना के तहसीलदार पं. राधाकृष्ण और श्रीमती माया देवी के पुत्र के रूप में अमृतसर में हुआ। पं. राधाकृष्ण जी मूलतः माहेश्वरी राजस्थानी थे। सारा आर्य जगत् मास्टर आत्माराम जी को पंजाब का अमृतसरी नाम से ही जानता और मानता था, उन्होंने अपने जीवन में कभी भी जातिवाचक माहेश्वरी शब्द का प्रयोग कहीं भी नहीं किया। आपने ज्यों ही आर्यसमाज में प्रवेश किया तो मुनिवर गुरुदत्त जी की प्रेरणा से माहेश्वरी जातिसूचक शब्द का प्रयोग छोड़ दिया।

आपके पूज्य पिता अपनी बिरादरी में सबके सच्चे मित्र, हितैषी और निरभिमानी व्यक्ति थे। आपकी माता वीर नारी, ब्राह्मण माता, दानशूरा और अत्यन्त स्वच्छता प्रिय थी। आपने अपने माता-पिता के संस्कारों को अपने जीवन में उतारकर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार को चार चाँद लगा दिये।

जिस प्रकार अमर शहीद लेखराम जी कन्हैयालाल अलखधारी जी के साहित्य से प्रभावित हुए उसी प्रकार आत्माराम जी ने भी अलखधारी जी के भक्त, प्रशंसक बनकर अन्धविश्वासों से छुटकारा पा लिया।

आत्माराम जी की पूज्य माता श्रीमती माया देवी जी आत्माराम के आर्यसमाजी बनने पर कहा करती थीं कि "यह अपने पिता पर गया है, वह भी ठाकुर-पूजा को पत्थर-पूजा कहा करते थे।"

आत्माराम जी की आयु अभी पाँच वर्ष की थी कि आपके पिता जी का निधन हो गया। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू ब्रान्च स्कूल में हुई। आप प्रारम्भ से मेधावी छात्र रहे। आर्यसमाज में आपका प्रवेश ड्रॉइंग टीचर लाला मुरलीधर जी के व्यक्तित्व के कारण हुआ। मिडल कक्षा तक कक्षा में सदैव प्रथम रहते थे। हाई स्कूल में आते-आते आप गणित विषय को छोड़कर शेष सब विषयों में प्रथम रहा करते थे। माता जी की रुग्णता के कारण वह एफ.ए. की परीक्षा न दे सके। माहेश्वरी समाज मास्टर जी को तहसीलदार के रूप में देखना चाहता था, परन्तु आर्यसमाज के दीवाने ने अध्यापक के रूप में कार्य करना अच्छा समझा और वह मास्टर जी के नाम से समाज में प्रसिद्धि पा गये।

आप अपने इस क्षेत्र अस्पृश्यता व जाति-पाँति आन्दोलन के नेता के रूप में प्रसिद्ध हो गये। जब पंजाब में अछूत रहतियों की शुद्धि लाहौर बच्छोवाली की ओर से आरम्भ हुई तो आप प्रथम ही थे जिन्होंने भरी सभा में खड़े होकर भाषण दिया और उनके हाथ से जलपान-ग्रहण किया और उनका अनुकरण करते हुए आर्यसमाज के एक और नेता, दलितोद्धार के प्रमुख सेनानी चौधरी रामभजदत्त जी ने जल पिया। इसका परिणाम यह हुआ

कि अमृतसर की माहेश्वरी पौराणिक बिरादरी ने आपको १२ वर्ष तक बिरादरी से बाहर रखा, इतना ही नहीं अपितु आपके घर में कोई नया शिशु उत्पन्न होता तो उन दिनों आपकी बिरादरी की कोई देवी भी आपके घर नहीं आती थी।

उन दिनों पंजाब के नवयुवक पाश्चात्त्य पद्धति से प्रभावित होकर बड़ी तीव्र गति से ईसाई बन रहे थे। उधर मुसलमान भी लुकाछुपी हिन्दू का धर्मान्तरण कर रहे थे। हिन्दुओं का कोई संगठन इस आंधी को नहीं रोक पा रहा था। आर्यसमाज के उस समय क्रान्तिकारी विद्वान् मास्टर आत्माराम जी ने न केवल इस बुराई के विरुद्ध 'हितकारी' पत्रिका में लेखों के माध्यम से बिगुल बजा दिया। इसका प्रभाव यह हुआ कि यह आंधी रुकनी प्रारम्भ हो गई। अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिए और वैदिक धर्म के उच्च आदर्शों की पूर्ति के लिए आपने अनेक ग्रन्थ भी रचे तथा लगभग ५० शास्त्रार्थ उस क्षेत्र में किये।

पूरे २० वर्ष आर्यसमाज पंजाब तथा उत्तर-हिन्द में आर्यसमाज की अनेक विध सेवायें करने के पश्चात् आप स्वामी नित्यानन्द जी तथा स्वामी विश्वेश्रानन्द जी की प्रेरणा से २ अगस्त १९०८ को उपदेशक से इन्सपैक्टर बनकर बड़ौदा राज्य में श्रीमान् हिजहाइनेस बड़ौदा नरेश की सेवा में पहुँच गये और अपनी आयु का अधिकतर भाग शिक्षा प्रचार, अछूतोद्धार एवं आर्यसमाज की सेवा ग्रन्थकर्त्ता के रूप में करने लगे। १८ वर्ष तक जिन-जिन ग्रामों में आप अछूत भाइयों के उद्धार के लिये फिरते रहे उन-उन ग्रामों में पूरे १८ वर्ष तक गुजरात की हिन्दू-ग्रामीण से आपका बहिष्कार होता रहा।

होलियों की छुट्टियों में अनेक वर्ष तक महाविद्यालय ज्वालापुर के निमन्त्रण पर आप आर्यसमाज के मार्मिक विषयों पर भाषण देने जाया करते थे। आपको आपकी विद्वत्ता के लिए श्रीमद् जगद्गुरु शारदापीठाधीश शंकराचार्य, आर्य महोपदेशक पण्डितवर स्वामी श्री भारतीयकृष्ण तीर्थ जी ने आपके रचित ग्रन्थों द्वारा उनकी योग्यता ज्ञान और वाचाशक्ति श्रवण कर "व्याख्यानवाचस्पति" की उच्च उपाधि से विभूषित किया।

आपने गुरुकुल वृन्दावन जैसी पुण्यभूमि में जाकर अपने अमृतमय उपदेशों से सारे कुलवासियों की पूरी सेवा की। गुरुकुल वृन्दावन की उगमगाती नौका के कणधार बनकर जो उपकार किया है वह संयुक्त प्रान्तीय सभाओं, विशेषतया आर्यजगत् को चिरस्मरणीय रहेगा।

मास्टर जी का जन्म एक सुखी सम्पन्न परिवार में हुआ था। चाहे छोटी आयु में पिता का निधन हो गया था, परन्तु घर में सुख-सुविधाओं की कमी नहीं। उनके घर में काफी समय से एक मेहतरानी इनके घर में काम करने आया करती थी। उसकी पुत्री विवाह योग्य हो गई थी तब वह अपनी जान पहचान वाले सब घरों से विवाह में सहयोग हेतु प्रार्थना करने गई। मास्टर जी की पत्नी श्रीमती यशोदा जी से सहयोग माँगा तो यशोदा देवी जी ने तत्काल अपनी जेब से अठन्नी का एक सिक्का दे दिया। मेहतरानी जानती थी कि मास्टर आत्मा राम जी दलित हितैषी हैं अत: उसे अधिक सहायता की आशा थी, परन्तु वह निराश हो गई। इसी बीच आत्माराम जी वहाँ पहुँच गये और मेहतरानी से पूछा कि विवाह पर कितना व्यय होगा? मेहतरानी ने कहा कि २५०-३०० रुपये तक व्यय होंगे। वे कमरे के अन्दर गये और उस मेहतरानी को गिनकर ३०० रुपये दे दिये। इतने रुपये पाकर हर्ष से उसके हाथ तो एक बार काँपने लगे। इसके साथ आत्माराम ने कहा, "सुन! तेरी पुत्री की बारात मेरे घर पर आयेगी। यहीं उसका स्वागत व भोजन होगा।" यह सुनकर मेहतरानी दंग रह गयी।

आत्माराम जी ने अपने सामाजिक बन्धुओं से इस विषय पर चर्चा की और सर्वसम्मत निर्णय हो गया कि तब क्या-क्या करना है? जिस दरी पर परिवार में आने वाले माहेश्वरी खत्री ब्राह्मण और अरोड़वंशी जाट बिठाये

जाते थे वैसी ही दरी पर मेहतरानी कन्या की बारात का स्वागत हुआ। अब दलितों को वोट बैंक बनाने वाले लीडरों से कोई पूछे तो क्या गाँधी से लेकर वर्तमान के किसी भी बड़े नेता के घर पर किसी दलित कन्या का विवाह रचाया गया? ऐसा तो महर्षि दयानन्द का सच्चा दीवाना मास्टर आत्माराम अमृतसरी ही कर सकता था।

आप वैदिक धर्म की महत्ता राजा महाराजाओं को भी बतलाने में कभी नहीं चूकते थे। जब आप कोल्हापुर स्वर्गवासी श्रीमन्त शाहू छत्रपति जी महाराज के आमन्त्रण पर उनके राज्य में अन्त्यज शिक्षण की संस्थाओं को एक इन्स्पेक्टर के रूप में देखने गये तो अवकाश के समय उन्हें अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश, फाउन्टेन हैड ऑफ रिलीजियन, सृष्टि विज्ञान और संस्कार चन्द्रिका श्री महाराज साहेब को भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन ग्रन्थों को देखकर महाराज साहेब ने आपसे आर्यसमाज सम्बन्धी कुछ प्रश्न पूछे, जिनके उत्तर पं. जी ने बड़ी विद्वत्तापूर्ण देकर उन पर वैदिक धर्म का सिक्का जमा दिया। महाराज साहेब आर्यसमाजी हो गये, इस बात की घोषणा हो गई। यह बात सुनकर महाराज साहेब ने आप से कहा, "क्या मेरा नाम आपके किसी समाज में नहीं है।" इसके उत्तर में पं. जी ने कहा, "नाम चाहे किसी रजिस्टर में हो या न हो, जो समाज के दस नियमों को मानता है, वह नि:सन्देह आर्यसमाजी है।" इसके पश्चात् महाराज साहेब ने बम्बई के एक मराठा सम्मेलन में भाषण देते हुए आप के लिए यह कहा, "मुझे पं. आत्माराम ने आर्यसमाजी बनाया है।" इसके उपरान्त श्रीमन्त कोल्हापुर नरेश जब तक जीवित रहे तब तक आपको अपना धर्मगुरु एवं राज-उपदेशक मानते रहे। पं. जी की प्रबल प्रेरणा से आर्यसमाज कोल्हापुर और राजाराम कॉलेज कोल्हापुर के लिए जो भारी दान मिला, वह आर्यजगत् से छिपा नहीं है। इसके अतिरिक्त आपने किशनगढ़ महाराज एवं राजधिराज नाहरसिंह वर्मा शाहपुराधीश इत्यादि महाराजाओं को अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणों से मुग्ध कर प्रीति सम्पादन की थी।

उच्च कन्या शिक्षण के लिए जो सेवायें स्त्री जाति की अमृतसर में की गई उसका फल यह हुआ कि वहां के एक पौराणिक सेठ श्री धोलनदास जी ने अपने वार्षिक व्यय से कन्या पाठशाला खड़ी कर उसके संचालन का भार पं. आत्माराम जी को दे दिया।

आप स्वदेशी वस्तु प्रचार के परमपोषक थे। महात्मा मुंशीराम जी ने जालन्धर में एक बार चर्चा की कि हमारे उपदेशकों का वेश स्वदेशी कपड़े का ही होना चाहिये। इस पर यह काम जनता में प्रचार करने का पं. जी के सुपुर्द किया। आपने एक सप्ताह के अन्दर उक्त वेश धारण कर जालन्धर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर स्वदेश वस्तु के प्रचार-प्रसार की अपील की। जिसका आम जनों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और लोगों ने धड़ाधड स्वदेशी वस्त्रों को धारण करना प्रारम्भ कर दिया।

मास्टर आत्माराम जी सोच-विचार कर बोलते थे। श्री अमर स्वामी जी ने एक बार कहा था कि बिना सोचे विचारे वेदी से कुछ बोल देना अपना तथा अपने श्रोताओं का समय नष्ट करना होता है। आत्माराम जी की व्याख्यान शैली की यही विशेषता थी कि वह कहाँ? क्या? और कैसे? बोलना है। महात्मा मुंशीराम जी की पुस्तक 'उपदेश मन्जरी के प्रवचन' पर समीक्षा करते हुए मास्टर जी ने वेद की रक्षा व प्रचार के लिए विद्वान् लेखकों के तीन गुणों में से एक यह लिखा है कि धार्मिक विद्वान् पक्षपात रहित होकर निडरतापूर्वक सत्य के खण्डन तथा मिथ्या मत सत्य असत्य के खण्डन में सदैव तत्पर रहता है।

राजस्थान में प्रचार करने के लिए न जाने कितनी बार पैदल यात्रायें की। उस समय रेल की व्यवस्था अब जितनी विकसित नहीं होती थी। अधिकांश नगर व कस्बे देश के स्वतन्त्र होने पर भी रेलमार्ग से कटे हुए थे। धर्मप्रचार की ऐसी धुन हमारे प्रचारकों एवं विद्वानों पर

होती थी कि उन्हें कई-कई मील पैदल यात्रायें करनी पड़ती थी। १८ जुलाई १८९८ को महात्मा मुंशीराम जी तथा पं. वज़ीरचन्द जी के साथ राजस्थान की प्रचार यात्रा के लिए निकले। प्लेग की महामारी से पूरा देश आंतकित था। अजमेर से उनको शाहपुरा जाना था। एक स्टेशन पर इनके लिए नाहरसिंह ने एक गाड़ी तथा सामान के लिए रेहड़ा भेज दिया। वज़ीरचन्द जी काफी अस्वस्थ थे उनको एक सेजगाड़ी में बिठाकर महात्मा जी और मास्टर आत्मा जी पैदल अजमेर से शाहपुरा के लिए चल पड़े। अजमेर से शाहपुरा लगभग ३०-३५ किलोमीटर होना चाहिये। इन दोनों आदरणीय महापुरुषों ने यह सारा मार्ग पैदल चलकर यह यात्रा पूरी की। इन पूज्य पुरुषों के किसी भी लेख में हमने किसी यात्रा की कठिनाईयों का रोना नहीं पढ़ा। धन्य थे हमारे ये धर्मवीर। प्लेग की महामारी में भी अपने परिवार को तजकर धर्मप्रचार के लिए दीवाने निकल पड़े।

मास्टर जी की एक मुख्य देन-सर्वधर्म सम्मेलन थी। देश स्वतन्त्र होने के पश्चात् तो अपवाद रूप में ही कहीं-कहीं सर्वधर्म सम्मेलन आयोजन किया जाता है। १९४७ से पहले देश भर के आर्यसमाजों में सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किये जाते थे। प्रत्येक मत-पन्थ वाले अपने मत का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया करते थे। इन सम्मेलनों का परिणाम अच्छा होता था। लाभ तो शास्त्रार्थों से बहुत होता था, परन्तु सरकार की रीति आर्यसमाज विरोधी व मुसलमानों से पक्षपात की रही अत: इस कारण दंगे और विवाद को रोकना एक जटिल समस्या बनी रहती थी। सर्वधर्म सम्मेलन विधिवत कराने का निर्णय मास्टर आत्माराम जी के सुझाव पर ही लिया गया था।

पं. आत्माराम जी के तर्क बड़े सरल व सहज होते थे। वे विचारकों तथा जनसाधारण को अपनी बात समझाने की विचित्र ऊहा रखते थे। स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों की बात करना अब तो राजनैतिक अथवा वैचारिक फ़ैशन बन गया है, परन्तु १०० वर्षों पूर्व जब कोई स्त्री-पुरुष के समान अधीकार की चर्चा करता था तब सुशिक्षित लोग भी उनका उपहास उड़ाते थे। आत्माराम जी ने अपना दृष्टिकोण किस दक्षता से प्रकट किया है, ''जब हम कहते हैं कि पुरुष-स्त्री के समान अधिकार रखता है तो हमें समझ लेना चाहिये कि किन बातों में समान अधिकार रखता है। एक शिक्षक तथा चिकित्सक अपने व्यवसाय तथा अधिकार की दृष्टि से भिन्न-भिन्न है, परन्तु जब हम कहें कि शिक्षक तथा वैद्य के समान अधिकार हैं तो समझा जाता है कि कोई विशेष बात होनी चाहिये जिससे कि उनके समान अधिकार समझे जा सके। एक कुएँ से जल पीने, एक वाटिका में भ्रमण करने एक विद्यालय में शिक्षा पाने, एक प्रकार का भोजन करने अथवा एक ही वाहन में बैठकर यात्रा करने से शिक्षक तथा वैद्य समान अधिकारी हो सकते हैं।'' इसको स्पष्ट करते हुए अपने आगे क्या सुन्दर तर्क दिया है, 'जब हम कहते हैं कि शूद्रों को भी वेद पढ़ने का अधिकार है तो हमारी युक्ति यह भी है कि ईश्वर ने उनको भी वाणी, कान, आँखें आदि इन्द्रियाँ जो पठन-पाठन करने वालों को चाहिये दी हुई है अत: इन इन्द्रियों की आवश्यकता की पूर्ति उनका कार्य है। यजुर्वेद अध्याय ११ मन्त्र संख्या ५१ यह उपदेश करता है, ''पुरुष की स्त्री तथा स्त्री की पुरुष सेवा किया करे। क्या यह समानता का घोष नहीं है।''

यह तथ्य सबको मान्य है कि आत्माराम जी को पंजाब छुड़वाकर दलितोद्धार व शिक्षा प्रसार के लिए बड़ौदा राज्य में लाया गया। दलित बालकों को पढ़ाना तो दूर, उनके पास कोई फटकता भी नहीं था। उस राज्य की सुधारवादी नीति ने देश को डॉ. भीमराव अम्बेडकर सा नेता दिया, परन्तु उसी डॉ. अम्बेडकर का निर्माण पं. आत्माराम जी के मार्गदर्शन व सहयोग से ही सम्भव हो सका। इस तथ्य को करने व मुखरित करने से नेता लोग, इतिहास लेखक क्यों डरते हैं?

मास्टर आत्माराम जी प्रत्येक दृष्टि से अत्यन्त

भाग्यशाली थे कि आपको जीवन के हर मोड़ पर बहुत दूरगामी सर्वहितकारी कार्यों को करने का दायित्व सौंपा गया। पं. लेखराम जी अपने द्वारा संग्रहीत सामग्री के आधार पर ऋषि जीवन के लेखन का कार्य करते हुए ६ मार्च १८९७ को धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग कर गये तो पंजाब सभा के सामने यह गम्भीर प्रश्न उपस्थित हुआ कि इस अति कठिन आर्य को कौन सिरे चढ़ावे। तब एक स्वर से सारा आर्यसमाज और आर्यसमाज के नेताओं ने २१ मार्च १८९७ की बैठक में सर्वसम्मति से ग्रन्थ के लेखन सम्पादन का कार्य भार श्रीमान् आत्माराम जी को सौंप दिया। इसके साथ-साथ सत्यार्थप्रकाश का प्रामाणिक उर्दू अनुवाद का सम्पादन कार्य भी पं. जी को सौंपा गया।

महर्षि दयानन्द जी ने देश-देशान्तरों में अपने मिशन वैदिक धर्मप्रचार तथा देश के दीनों-अनाथों की रक्षा के लिए परोपकारिणी सभा अजमेर का गठन किया। ऋषि के बलिदान तथा उसके शीघ्र पश्चात् महाराणा सज्जनसिंह के आकस्मिक निधन से सभा को बड़ा धक्का लगा। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के विशेष प्रयत्नों से सभा के आर्यकरण की लहर कुछ सफल हुई और धीरे-धीरे पं. आत्माराम जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, पं. भगवद्दत्त सरीखे तेजस्वी पुरुषों को एक-एक करके सभा का न्यासी बनाया गया। पं. आत्माराम जी वैसे तो अपने आरम्भिक काल से परोपकारिणी सभा की गतिविधियों में रुचि लेते थे, परन्तु ३१ मार्च १९३१ को आपको विधिवत् परोपकारिणी सभा का न्यासी बनाया गया। परोपकारिणी सभा का सदस्य बनने से सभा को भी आपके व्यक्तित्व व कार्यों से विशेष लाभ पहुँचा।

महात्मा आत्माराम जी का जीवन तो शानदार था ही, उनकी मृत्यु भी शानदार रही। श्रद्धेय आत्माराम जी के परिवार के सदस्य यह बताते हैं कि उन्हें अपनी मृत्यु का पूर्वाभास एक मास पूर्व ही हो चुका था। आत्माराम जी ने अपने स्वजनों को बता दिया था कि २५ जुलाई १९३८ के पश्चात् नहीं जीएंगे, सो ऐसा ही हुआ और पं. जी ने सुखपूर्वक इस तिथि को देह का त्याग कर दिया। मृत्यु से पूर्व उन्हें जो प्रार्थना की थी जिसे उनका सर्वश्रेष्ठ उपदेश मानना चाहिये।

"भगवान् तेरी प्रेरणा से आज तक जो कुछ करना था, सब किया है, अब कुछ भी शेष नहीं। यह जीवन मेरा तब तक ही रहे, जब तक मेरे हाथ पाँवों में शक्ति है। जिस दिन प्रभु मेरा घूमना-फिरना और नित्य कर्म अपने आप न हो उस दिन से मैं एक क्षण भी जीना नहीं चाहता।"

मृत्यु से पूर्व एक बात कही कि मेरा सिर उत्तर दिशा की ओर कर दो। यह कहकर ओ३म् का उच्चारण किया और चल दिये। दिव्य जीवन बिताने वाली पुण्य आत्माओं को देह त्याग कितनी शान्ति प्राप्त होती है। यह देखकर स्वजनों को बड़ा सन्तोष हुआ। उनका जीवन एक खुली पुस्तक था। आशा है आने वाली पीढ़ियाँ उनके इस प्रेरक जीवन से अनुप्राणित होकर लोककल्याण के लिए जीवन समर्पित करके यश के भागी बनेंगे।

सहयोगी ग्रन्थ

१. एक स्वनिर्मित जीवन पं. आत्माराम अमृतसरी- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

२. आत्माराम राज्य रत्न बड़ौदा का जीवन चरित्र- श्री महेशचन्द्र बी.ए.

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

ऋषि मेला-२०२५

शुक्रवार, शनिवार, व रविवार ७, ८ व ९ नवम्बर २०२५

सज्जनों के सुकृत शान्तिप्रद हों

आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक'

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वृहत् यज्ञों व संस्कारों से पूर्व ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के बाद स्वस्तिवाचन व शान्तिकरण के रूप में जिन मन्त्रों का चयन किया है, वे मानव जीवन से जुड़ी हुई व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करते हैं। हमारे इस लेख का शीर्षक हमने शान्तिकरण के एक मन्त्र का अंश है। ऋग्वेद के मन्त्र- 'शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु... शं न इषिरो अभिवातु वात:' (७.३५.४) को महर्षि ने शान्तिकरण के चौथे मन्त्र के रूप में लिया है। इसी मन्त्र का तीसरा चरण है- 'शं न: सुकृतां सुकृतानि सन्तु' अर्थात् सुकृतों-धर्मात्मा, लोकहितैषी जनों के सुकृत कर्म अर्थात् समाजहित के कार्य हमारे लिए शान्तिकारक हों, सुखद हों। इसमें प्रार्थना की गई है कि सज्जनों के सुकर्म, सत्कर्म हमारे लिए सुख-शान्तिकारक हों। तनिक विचार करने पर यह प्रार्थना कुछ अटपटी-सी लगती है। समाज सेवी सज्जनों के सुकर्म, समाज सेवा-अभिमान तो सदैव समाज हित में ही होते हैं। तभी तो वे सुकृत कहलाते हैं। ऐसे कर्मों से कभी किसी का अहित होने की सम्भावना ही नहीं, फिर यह प्रार्थना क्यों? कोई प्रार्थना करे कि हे ईश्वर गुड़ मेरे लिए मीठा हो तो कोई ऐसी प्रार्थना सुनकर हँसेगा। गुड तो स्वाभाविक रूप से मीठा ही होता है तो 'वह मेरे लिए मीठा हो' ऐसी प्रार्थना का औचित्य क्या रहा? इसी प्रकार जब सज्जनों के सुकर्म सबके लिए ही सुखद व शान्तिप्रद होते हैं तो प्रार्थना क्यों?

सामान्य बुद्धि से विचार करने पर ऐसा ही लगता है कि यह प्रार्थना औचित्य शून्य है। लेकिन वेद के माध्यम से परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, वह औचित्य शून्य या अनुपयोगी नहीं हो सकता। ईश्वर प्रदत्त वेद विद्या और उसको समझने-समझाने के लिए व्याख्या रूप में लिखे गये ऋषि ग्रन्थों को सामान्य व्यक्ति अपनी सामान्य बुद्धि से समझने का प्रयास करेगा तो सत्य-अर्थ तक नहीं पहुँच सकेगा। पण्डित की परिभाषा बताते हुए महात्मा विदुर लिखते हैं- ''श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य, प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।'' अर्थात् जिसकी पढ़ी-सुनी विद्या सदैव बुद्धि के अनुकूल हो अर्थात् बुद्धिगम्य हो, तर्क सम्मत हो। दूसरी बात कही है कि जिसकी बुद्धि सदैव पढ़े-सुने के अनुकूल चलने वाली हो। भारत लगभग महाभारत के बाद से ही शास्त्रानुकूल बुद्धि के स्थान पर स्व बुद्धि के अनुकूल शास्त्रों की व्याख्या करने के रोग से ग्रस्त रहा है। हमारे पण्डित लोग वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते रहे और वेद में हर प्रकार की बुराई भी देखते बताते रहे। हर प्रकार का अनर्थ वेदों का नाम ले-लेकर करते रहे। सायण और महीधर आदि के वेदभाष्यों को पढ़ें तो उन्होंने अतार्किक, अवैज्ञानिक तथ्यों के साथ असामान्य स्तर की अश्लीलता भी देखने को मिलती है। इसका एक मात्र कारण यही है कि उन्होंने वेदों को वेद की दृष्टि से नहीं, अपनी मानवीय बुद्धि के अनुसार समझा और समझाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने व्याकरण विद्या का अवगाहन करके अपनी तप-साधना के द्वारा ऋतम्भरा बुद्धि को प्राप्त किया। वेदों को वेद के अनुसार ही समझा। ऋषि के अनुयाई होने के कारण हम आर्यो को उचित है कि हम वेद को वेद के अनुसार ही समझने का प्रयास करें, स्वबुद्धि के अनुसार नहीं।

समाज-हित व परोपकार के लिए सज्जनों द्वारा किये गये समस्त सुकृत सदैव सबके लिए न कभी शान्तिप्रद रहे हैं और न सुखद। इतिहास चीख-चीख कर बता रहा है कि समाज के लिए सत्योपदेश करने वाले समाज सुधारकों के साथ हमने सदैव क्रूरता की पराकाष्ठा वाला दुर्व्यवहार ही किया है। शंकराचार्य को बत्तीस वर्ष की अल्पवय में विषय देकर मार डाला। सुकरात को भी विषपान से प्राण देने पड़े। महर्षि दयानन्द को तो कई बार और कई प्रकार से विष दिया गया।

तलवार से मारने का प्रयास किया। सांप फेंके गये, ईंट-पत्थर मारे गये, लाठी-डण्डों के साथ आक्रमण करने के प्रयास किये। हत्या करने का कौनसा उपाय थ, जो नहीं किया गया हो। यह सब क्यों किया, किसने किया? क्या ऐसा करने वाले महर्षि दयानन्द के किसी पाप कर्म का विरोध कर रहे थे? क्या ऋषि को किसी अपराध का दण्ड देने के लिए यह सब किया गया? नहीं। महर्षि दयानन्द तो सर्वथा निष्पाप थे, निष्कलंक थे, निरपराध थे। उन्होंने कभी किसी के साथ कोई बुरा नहीं किया। वे तो भारत भूमि को और भारत के द्वारा समस्त भूमण्डल को प्रभु की वेदववाणी से आलोकित करने के पुण्य कार्य में लगे रहे। उन्होंने सदैव सबका हित ही किया, सबको सुख-शान्ति मिले- आनन्द मिले, इसी कामना से वो जीवन भर सत्योपदेश करते रहे। फिर क्यों कुछ लोग उनको मारने की योजना पर काम करते रहे? क्या वे महर्षि के इस समाज सुधार कार्य से सुख-शान्ति का अनुभव कर रहे थे। अगर सुख शान्ति का अनुभव करते तो ये लोग महर्षि के प्राण हरण के प्रयास न करते, बल्कि महर्षि के वेद प्रचार अभियान में सहयोगी बनकर समाज सेवा का पुण्य प्राप्त करते।

निश्चित रूप से ऐसा करने वाले वे अभागे लोग थे, जिन्हें सत्य धर्म से आन्तरिक लगाव नहीं था। जिनके हृदय में अविद्यान्धकार प्रबलता से छाया रहता है, जो अज्ञान-अविद्याजन्य दोषों, दुर्गुणों और दुर्व्यसनों में आकण्ठ डूब चुके होते हैं, उन्हें मानवता का हित करने वाले महापुरुषों के महान् कार्य कांटे की तरह चुभते हैं। सत्य कान में पड़ते ही उनकी चीखें निकल जाती हैं। वेद ऐसे लोगों के लिए ही- 'असूर्या नाम ते लोका: अन्धेन तमसावृता:' जैसी घोषणा करता है। उपनिषद् के ऋषि उन्हीं के लिए कहते हैं- 'अविद्यायामन्तरे वर्तमाना: स्वयं धीरापण्डितंमन्यमाना:।' ऐसे लोगों को -'अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धा:' कहकर सचेत भी किया गया है, क्योंकि मरने के बाद ऐसे लोगों को ही अज्ञानान्धकार से पूर्ण आवृत लोकों की प्राप्ति होती है। थोड़ी-सी भी चेतना-सम्पन्न, थोड़ी-सी भी बुद्धिवाला व्यक्ति लोकोपकार में प्रवृत्त महापुरुषों के लोकहितैषी कार्यों का विरोध करके अन्धकार से आवृत लोकों में जाना नहीं चाहता। वह जानता है कि लोकहितैषी महापुरुषों की लोक-कल्याणी वाणी का तिरस्कार करके कोई सुख कैसे पा सकता है? मनुष्य मात्र का हित चाहने वाले समाज सुधारक अपने सत्य उपदेशों के द्वारा ही सबका कल्याण करते हैं। वे धन अथवा अन्य जीवनोपयोगी संसाधन देकर किसी का भला नहीं कर सकते। वे अपने शरीर से लोगों की सेवा-सहायता करके भी अधिक लोगों का उपकार नहीं कर सकते। हाँ जो धनवान लोग दान आदि का सहयोग देकर जितने लोगों का भला कर सकते हैं, सेवाभावी लोग अपने शरीर से सेवा करके जितने लोगों को सुख पहुँचा सकते हैं, उनसे कई गुने अधिक लोगों को सुख-लाभ वे धार्मिक विद्वान् पहुँचा सकते हैं, जो सर्वत्र विचरण करते हुए सत्य विद्या का उपदेश करते हैं।

धर्मात्मा समाज सुधारक जितने अधिक लोगों का और जितना अधिक भला कर सकते हैं, उतना अन्न-धन देनेवाले व शरीर से सेवा करने वाले नहीं कर सकते। इसे समझाते हुए किसी कवि ने लिखा है-

अन्नदानं परमदानम्, विद्यादानं ततः परम्।
अन्नेन क्षणिका तृप्तिः, यावज्जीवन विद्यया।।

अर्थात् अन्न का दान सबसे बड़ा दान माना है। 'अन्नं वै प्राणिनां प्राण:' के अनुसार अन्न सबका प्राण पोषक है, प्राण आधार है, इसलिए परम दान है। विद्यादान उससे भी बड़ा है। कारण कि अन्न से क्षणिक तृप्ति होती है। प्रात:काल किसी को भोजन खिला दोगे तो सायंकाल को पुन: भूख लगेगी। विद्या जीवन भर काम आती है। कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के जीवन भर का अन्न-धन का प्रबन्ध नहीं कर सकता। करना भी चाहे तो कितने लोगों का कर पायेगा? हाँ एक सत्योपदेश करने वाला, किसी को विद्यादान करके शिल्प विद्या सिखाने वाला सैकड़ों सहस्रों नर-नारियों को अजीविका प्रदान कर सकता है। यह है विद्यादान की विशेषता।

जो धार्मिक विद्वान् समाज-सुधारक अपने सत्य-उपदेशों से अगणित लोगों का जीवन सुधार करने में सक्षम हैं। जो अहर्निश इसी पवित्र अभियान में अपना जीवन समर्पित किये हुए हैं, जो विरोध और विपत्तियाँ सहन करते हुए भी निःस्वार्थ भाव से सबका जीवन-सुधार करने में लगे हैं, ऐसे सुकर्माजनों के सुकर्म हमारे लिए सुख-शान्ति और सन्तुष्टि देनेवाले न होंगे तो कहो हमारा जीवन सुधार होगा कैसे? श्रीकृष्ण गीता में स्पष्ट शब्दों में बता रहे हैं- "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते", अर्थात् संसार में ज्ञान से बढ़कर हमारे जीवन को पवित्र करने वाला कुछ नहीं है। ऋषि दयानन्द भी लिखते हैं कि सत्योपदेश के बिना मानव-उन्नति का अन्य कोई उपाय नहीं है। जीवन को पवित्र करने वाला ज्ञान और सत्य उपदेश हमारे लिए सुखद हों, शान्तिप्रद हों, यह प्रार्थना कितनी आवश्यक है कितनी मूल्यवान है, यह सामान्य समझ वाला नहीं, विद्या-विज्ञान के रहस्य को समझने वाला व्यक्ति ही जान सकता है। जो लोग वेद की इस छोटी-सी प्रार्थना का रहस्य समझ लेते, वे क्या शंकाराचार्य और महर्षि दयानन्द जैसे लोकपुरुषों को विष देने का जघन्य पाप करते?

संसार में ऐसे लोग पहले भी रहे हैं और आज भी हैं, जिन्हें सुकर्माजनों के सुकर्म सुखद और शान्तिप्रद नहीं लगते। वे अभागे प्रथम अपने आत्मकल्याण का अवसर गँवा देते हैं और दूसरे ऐसे सुकर्मा जनों के अहित करने का पाप भी करते हैं। वेद का स्तोता इन पाप कर्मों से दूर रहकर जीवन उद्धार के पुण्य प्रयासों का लाभ उठाना चाहता है। नरतन की सफलता सत्य को स्वीकारने में ही है, सत्य से विमुख जन का जीवन पशुता का पर्याय बनकर रह जाता है। आइये! हम सब मिलकर वैदिक भावना से ओत-प्रोत होकर वेद की भाषा में वेद ज्ञान के दाता परमेश्वर से यही प्रार्थना करें- "शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु" हे परमात्मन्! वेद विद्या के प्रचारक सर्वोपकारक धर्मोपदेशक, लोकहितैषी जनों के लोकहितार्थ दिये जाने वाले सत्योपदेश और उनके द्वारा प्रवर्तमान लोकहित के कार्य हमारे लिए सुखद हों, शान्तिप्रद हों।

।। आवश्यक सूचना ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी सभा अजमेर के द्वारा संस्थापित एवं संचालित महर्षि दयानन्द गुरुकुल आश्रम , ग्राम-जमानी, त-इटारसी, जिला-नर्मदापुरम्, मध्यप्रदेश के नाम से दान की रसीद छपवाकर अनधिकृत रुप से कुछ लोग गुरुकुल के नाम से दान एकत्रित करके धन का दुरुपयोग कर रहे हैं, एकत्रित किये हुए दान को सभा में जमा भी नही करवाते हैं और न ही कोई हिसाब सभा को देते हैं।

आप सभी आर्य महानुभावों से निवेदन है कि अनधिकृत व्यक्तियों को दान न देवे, और यदि उपरोक्त नाम की रसीद से आपने दान दिया है तो उस रसीद को अथवा उसकी फोटोकापी को अति शीघ्र सभा के निम्न पते पर भिजवावे।

जिससे परोपकारिणी सभा द्वारा अनधिकृत रुप से रसीद छपवाकर दान एकत्रित करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही की जा सके।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, पिन- ३०५००१

दूरभाष - ९९११९९७०७३

आर्यवीर दल का संस्कार एवं चरित्र निर्माण शिविर शौर्य एवं उत्साह से सम्पन्न

आर्य वीर दल अजमेर एवं परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में आर्य वीर श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर दिनांक १५ से २१ मई २०२५ को ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित किया गया। इस शिविर की विशेषता यह थी कि शिविर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रांतीय संचालक भवदेव शास्त्री के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। इसमें राष्ट्रीय स्तर के शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया, इसमें योगासन, प्राणायाम, ध्यान, सेल्फडिफेंस, एकाग्रता बढ़ाने के उपाय, शस्त्र संचालन, जूडो-कराटे एवं शारीरिक-मानसिक बौद्धिक विकास व चरित्र एवं संस्कार निर्माण की शिक्षा दी गई। इस शिविर में सैनिक शिक्षा का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। शिविर स्थल पर १४ मई २०२५ को रात्रि तक आर्यवीरों का आगमन रहा। शिविर में ११ कुण्डीय यज्ञ का भी आयोजन किया गया। शिविर में सभा प्रधान ओम्मुनि, मन्त्री कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष लक्ष्मण जिज्ञासु, आचार्य प्रभाकर, सुश्री कंचन आर्या, आचार्य सत्यनिष्ठ, डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी आदि विद्वान् के व्याख्यान हुए।

प्रति दिन प्रातः ४.३० बजे आर्यवीरों का मंत्र उच्चारण के साथ जागरण से हुआ। ५ बजे से प्रधान शिक्षक अभिषेक जी द्वारा सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार, नियुद्धम, दंड-बैठक, सर्वांग सुंदर व्यायाम, योगासन का अभ्यास कराया गया। तत्पश्चात् प्रातः कालीन यज्ञ के लिए विरजानन्द वर्ग को आमंत्रित किया गया।

प्रवचन में आचार्य जी ने यज्ञोपवीत/ जनेऊ में तीन धागे का अर्थ बताया जिसमें तीन ऋणों को समझाया - (१) पितृ, (२) देव, (३) ऋषि ऋण

तत्पश्चात् प्रातः राश समाप्ति पश्चात् सफाई निरीक्षण हुआ। जहां सभी आर्य वीरों ने अपने वर्ग की सफाई की। वासुदेव आर्य व आचार्य प्रभाकर जी निरीक्षक बने और विजेता वर्ग पंडित लेखराम वर्ग व चंद्रशेखर आजाद वर्ग को प्रथम स्थान दिया और ध्वज प्रदान कर प्रशंसा की।

बौद्धिक सत्र में वासुदेव जी ने अपना मार्गदर्शन छात्रों को दिया और ईश्वर के निज नाम ओम् को समझाया तथा ईश्वर के गुणों के आधार पर उनका नाम विष्णु, शिव आदि बताया।

शिविर के द्वितीय बौद्धिक सत्र में अरुण जी ने सबसे पवित्र ईश्वर वाणी वेद को समझाया और बताया, सर्वश्रेष्ठ दान विद्या दान को विस्तार पूर्वक समझाया।

दोपहर के भोजन के पश्चात् २.३० तक विश्राम के उपरान्त हर्ष जी ने कक्षा ली। आर्य वीर दल के पाठ्यक्रम अनुसार प्रथम पाठ आर्यवीर दल उद्देश्य, आवश्यकता को बताया। उद्देश्य में संस्कृति रक्षा, सेवा कार्य, शक्ति संचय को समझाया।

सांयकाल के सत्र में आर्यवीरों को लाठी, क्षुरिका और खेल खिलाया गया। तत्पश्चात् वैदिक संध्या, भोजन, भ्रमण, मनोरंजन सत्र का आयोजन किया गया।

ग्यारह कुंडीय यज्ञ हुआ- सभी आर्यवीरों को यज्ञ करने का अवसर प्राप्त हुआ जिसमें डॉ. सुरेन्द्र जी ने प्रवचन दिया। ईश्वर गलत कार्य करने पर लज्जा, शर्म आदि उत्पन्न करता है। कर्माशय को समझाया।

बौद्धिक प्रभाकर जी द्वारा प्रदान किया- अर्थ-पैसे को समझया कि आप पैसे से सब कुछ नहीं खरीद सकते। सुख आन्तरिक होता है। स्वास्थ्य को समझाया सोशल मीडिया रील्स में आंखें व फास्ट फूड आदि से शरीर कैसे खराब होता है।

आर्य वीर दल के जिला संचालक एवं शिविर संचालक विश्वास पारीक ने बताया कि चरित्रवान् युवाओं की फैक्ट्री है आर्य वीर दल।

यज्ञोपवीत संस्कार और भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ संपन्न हुआ- प्रात: काल व्यायाम प्रशिक्षण के पश्चात् यज्ञ के समक्ष सभी आर्य वीरों का आचार्य सत्यनिष्ठ जी के सानिध्य में संस्कार संपन्न हुआ सभी को माता-पिता गुरु और राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य को समझाया गया, यज्ञोपवीत की महिमा बताकर दीक्षित किया गया बौद्धिक सत्र में आर्यसमाज के प्रधान नवीन मिश्रा ने संस्कारों को अपने जीवन में उतारते हुए व्यवहार में लाने की और ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं पर चलने का संकल्प दिलाया। अगले सत्र में समस्त आर्य वीरों को डॉ. अनीता खुराना-प्रधानाचार्य नसीराबाद कॉलेज ने और श्रीमती राखी जी ने गुड टच, बैड टच के बारे में समझाया। दोपहर के सत्र में सभी आर्यवीरों की बौद्धिक, लिखित एवं शारीरिक परीक्षाएं हुई।

परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा- **वरिष्ठ वर्ग** में शारीरिक परीक्षा प्रथम अजयराज, द्वितीय मीमांश बौद्धिक परीक्षा में प्रथम प्रियांशु सैनी, **कनिष्ठ वर्ग** में शारीरिक परीक्षा में प्रथम ब्रह्मचारी मनीष एवं बौद्धिक परीक्षा में प्रथम आदित्य कुमावत, चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्णव शर्मा।

सांयकाल भव्य व्यायाम प्रदर्शन के तहत आर्य वीरों ने सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, जूडो-कराटे, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, संगीतमय सामूहिक योग अभ्यास और लेजियम का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रमेश सोनी जिला अध्यक्ष भाजपा शहर उपस्थित रहे, उन्होंने कहा कि आर्य वीर दल जैसे संगठन चरित्रवान् युवाओं की फैक्ट्री है, ऐसे शिविर में युवाओं का शारीरिक बौद्धिक और मानसिक विकास होता है, सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया गया अभिषेक, हर्षवर्धन, आचार्य प्रभाकर, आजाद ने बौद्धिक और शारीरिक प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम का संचालक विश्वास पारीक ने किया।

*** निवेदन ***

कीर्तिशेष आचार्य धर्मवीर जी ने अपने दानदाताओं के सहयोग से ऋषि उद्यान में निरन्तर चलने वाले ऋषि लंगर की व्यवस्था की थी, जो सतत संचालित हो रही है। इसमें ऋषि उद्यान की वृहद् भोजनशाला में **ऋषि उद्यान में निवास करने वाले योगसाधकों, संन्यासियों-वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों व आचार्यों के भोजन, दुग्ध, फल इत्यादि की व्यवस्था की जाती है।**

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों, विद्वानों, दर्शनार्थियों इत्यादि के निवास तथा भोजनादि की व्यवस्था इसके अन्तर्गत संचालित की जाती है।

आर्य दानदाता-परिवारों के सहयोग से ही यह अतिथि-यज्ञ सम्भव हो पा रहा है। अत: हम सभी आर्य परिवारों का दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि हम इस यज्ञ में होता बनकर निरन्तर दान-रूपी आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बनें। विभिन्न संस्कारों एवं अन्य शुभावसरों पर अपनी दान-रूपी आहुति देना न भूलें, ताकि यह लोकोपकारी अतिथि यज्ञ निरन्तर चलता रहे।

इस अतिथि यज्ञ हेतु आप **५१००/-(पाँच हजार एक सौ रुपये) प्रतिवर्ष** भेजकर अपना सहयोग प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

ओम्मुनि
प्रधान

कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री

ऋषि उद्यान में ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों को साधना, स्वाध्याय, सहयोग के लिए निमन्त्रण

अजमेर में **ऋषि उद्यान** आनासागर नामक झील के सुरम्य तट पर स्थित है। इसका संचालन महर्षि की उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा करती है। वृक्षावलियों एवं पुष्पोद्यान से सुशोभित यह आश्रम महर्षि-भक्तों का ध्यान आकर्षित करता रहता है। इस आश्रम में ही सभा द्वारा विभिन्न प्रकल्प संचालित किए जा रहे हैं। यहाँ देशी गायों की वृहद् गोशाला है, ब्रह्मचारियों के विद्याभ्यास के लिए गुरुकुल की व्यवस्था है। समागत अतिथियों के निवास व भोजन इत्यादि की उत्तम व्यवस्था है। इस आश्रम में दोनों समय सन्ध्या व यज्ञ का आयोजन किया जाता है। यह स्थान स्वाध्याय, योगाभ्यास एवं विद्याप्राप्ति का आदर्श केन्द्र है। समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों, योगशिविरों, आर्यवीर-वीरांगनाओं के शिविरों, विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यान इत्या दि का आयोजन इसकी जीवंतता के प्रमाण हैं।

सभी आर्य ब्रह्मचारियों तथा विशेषत: वानप्रस्थियों, संन्यासियों से निवेदन है कि अपनी आध्यात्मिक उन्नति एवं तप-स्वाध्याय के लिए स्थायी रूप से आश्रम में रहकर अपने जीवन को सार्थक करें तथा अपनी योग्यतानुसार सभा के प्रकल्पों में सहयोग करें।

ऋषि उद्यान में सोद्देश्य निवास करने के लिए इच्छुक आर्यजन कृपया अधोलिखित चलभाष-दूरभाष पर सम्पर्क करें -

१. श्री ओम्मुनि वानप्रस्थ (प्रधान) - 9950999679

२. श्री कन्हैयालाल आर्य (मन्त्री) - 9911197073

३. श्री रमेशचन्द्र आर्य, (ऋषि उद्यान) -9413356728

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्म-जयन्ती शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में ५० प्रतिशत की छुट

पुस्तक का नाम	वास्तविक मूल्य रुपये
विवाह पद्धति	२०
शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण	०२
वेदान्तिध्वान्त निवारण	०२
समाधी	१००
सामवेद शतक	३०
जिज्ञासा विमर्श	१००
इतिहास प्रदूषण	१००
इतिहास साक्षी	५०
वेदामृत	५०
सत्यासत्य निर्णय	२५
The Book of Prayer	35
Kashi Debate	20
A Critique of Swami Naryan Seet	20
An Examination of Vallabh Seet	20
Five Great Rituals of The Day	20
Bhramaccheden	25
Bhranti Nivarana	35
Atmakatha	20
Gokarunanidhi	12
Dayanand Interparetation of Vedas	05
संध्या सुरभि कलेण्डर	३५
महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ कलेण्डर	२५
The Pre Islamic Religious of Arabia	20
वेदमाता	१००
शंका समाधान	७०
ईश्वर	१५०
नवयुग की आहट	६०
वैदिक इस्लाम	१०
पं. आत्माराम अमृतसरी	१००
इतिहास बोल पड़ा	१००
मृत्यु सूक्त	२००
सत्यार्थ सुधा	१५०

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-

दूरभाष-**0145-2460120,**चलभाष- **7878303382**

(परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित)

योग–ध्यान स्वाध्याय शिविर

संवत् २०८२, आषाढ़ शुक्ल पंचमी से एकादशी तक, तदनुसार ३० जून से ०६ जुलाई २०२५

इस योग-साधना शिविर में योग सम्बन्धी विषयों का वैदिक-दर्शनों व उपनिषदों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

इस शिविर में निम्नलिखित प्रशिक्षक का सान्निध्य प्राप्त होगा –

०१ आचार्य आशीष, ०२. स्वामी विदेह योगी, ०३. डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, ०४. आचार्य अंकित प्रभाकर

संयोजक - स्वामी ओमानन्द सरस्वती - चलभाष ९४१४५८९५१०

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक शिविरार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
३. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
४. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
५. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
६. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
७. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
८. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।
९. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२९४८६९८, मो. ८८९०३१६९६१, ८८२४१४७०७४, ९९१११९७०७३) से सम्पर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार अतिरिक्त भुगतान से की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल

हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गम्भीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क २००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क २००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारम्भ दिनांक से एक दिन पहले सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है, क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

श्री ओम् मुनि - प्रधान **श्री कन्हैयालाल आर्य - मन्त्री**

९९५०९९९६७९ **९९१११९७०७३**

परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर **दूरभाष :** ०१४५-२९४८६९८,

मो.नं. ८८९०३१६९६१, ८८२४१४७०७४

- : मार्ग : -

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें। **- मन्त्री**

आभूषण

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नादि से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं होता क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है। **- सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास**

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्यों पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-

डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = ११००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर (VEDIC PUSTKALAYA , AJMER)

बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में सञ्चालित आर्ष गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ हैं। वैदिक धर्म के उपदेशक-प्रचारक बनने के इच्छुक युवा प्रवेश हेतु शीघ्र आवेदन करें।

प्रवेश हेतु अविवाहित एवं आठवीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। भोजन एवं आवास की नि:शुल्क सुविधा है। **सम्पर्क सूत्र: ८८९०३१६९६१**

आर्य संस्थाओं से आग्रह

आर्य समाज एवं अन्य आर्य संस्थाएं अपने निर्वाचन, वार्षिकोत्सव और योग शिविर आदि आयोजन के संक्षिप्त समाचार परोपकारी में प्रकाशनार्थ भिजवा सकते हैं।

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है– अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं।

आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है।

दूरभाष – 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम – परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष – 8890316961**

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

- कन्हैयालाल आर्य, मंत्री, परोपकारिणी सभा

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल अजमेर एवं परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में आर्य वीर श्रेणी का प्रशिक्षण शिविर दिनांक १५ से २१ मई २०२५ को ऋषि उद्यान अजमेर में आयोजित किया गया।

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल के रजत जयन्ती समारोह में गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा में 12 (बारह) आर्ष गुरुकुलों के छात्र छात्रों ने भाग लेकर पारितोषिक प्राप्त किया ।

आर जे/ए जे/80/2024-2026 तक   प्रेषण : १४-१५ जून २०२५   आर.एन.आई. ३९५९/५९

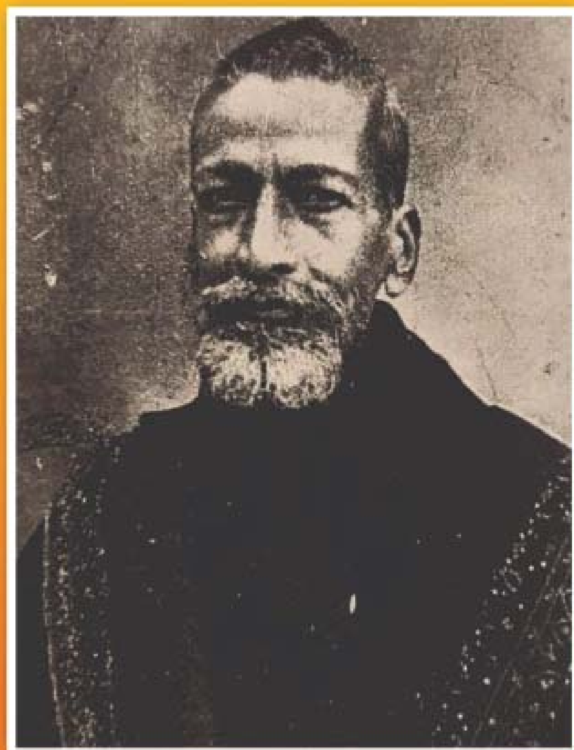

आत्मारामजी अमृतसरी

जन्म - 18 जून 1867

मृत्यु - 25 जुलाई 1938

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकट